



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

भिक्षु वाणी

सत्पुरुष

कलीव संक गरीबों में,
वही कायर पुरुष कंगाल।
त्यां पुरुषों में देखिली,
सत पुरुषों ही चात।

नपुंसक, रंक-निर्धन, कायर
और कृपण, इनके लिए दुर्लभ
है सत्पुरुषों की चाल।

● नई दिल्ली ● वर्ष 22 ● अंक 37 - 38 ● 21 जून - 4 जुलाई, 2021



प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 19-06-2021 ● पेज : 14 ● ₹ 10

विवेक केंद्रित पुरुषार्थ से कार्य की निष्पत्ति जल्दी आ सकती है : आचार्यश्री महाश्रमण



बिरमावल, 19 जून, 2021

समता के सागर आचार्यश्री महाश्रमण जी मालवा यात्रा के अंतर्गत रतलाम जिले में विहाररत हैं। परम पावन आज प्रातः विहार कर बिरमावल पधारे। जिस व्यक्ति का जीवन संयममय होता है, उसका जीवन अच्छा होता है। शांतिदूत ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी शांति चाहता है। शांति से जीवन जीना चाहता है और शांति में रहना चाहता है।

शांति चाहता है, फिर भी कभी-कभी अशांति से आक्रांत भी हो जाता है। चित्त में अशांति हो जाती है, प्रसन्नता नहीं रहती है। आदमी शांति में कैसे रह सके। प्रयास करना आदमी का कर्तव्य होता है। प्रयास और सफलता, पुरुषार्थ और सिद्धि। पुरुषार्थ करना कुछ अंशों में आदमी के हाथ में हो सकता है, परंतु पुरुषार्थ करने पर सिद्धि मिल ही जाएगी। यह कहना कठिन है। तत्काल सफलता न भी मिले।

भले अभी तत्काल सफलता नहीं मिली पर आगे की सफलता की नींव तैयार हो जाती है। यह चुनाव के उदाहरण से समझाया कि हार तो मिल गई पर कुछ वोट तो मिले। लोगों में पहचान तो हुई। इस बार की विजय में पिछली बार की असफलता का भी काम

हो सकता है। आदमी को झटपट निराश नहीं होना चाहिए।

मानकर चले कि पुरुषार्थ कभी खाली या बेकार नहीं जाता। आज नहीं कल, कल नहीं परसों, जो किया है, उसका परिणाम तो मिलेगा ही। आदमी को पुरुषार्थ से हार नहीं माननी चाहिए। जीवन में आगे बढ़ने का प्रयत्न करते रहो। कुछ बाधाएँ भी आ सकती हैं। बाधाओं को दूर करना संभव है।

जूते पहन रखें हैं तो फिर काँटों से क्या डरना। पुरुषार्थ करने वाले व्यक्ति में थोड़ा कष्ट सहन करने का मादा होना चाहिए। थोड़े कष्ट झेल लो, आगे बढ़िया रास्ता मिलेगा। जीवन में सम्यक् पुरुषार्थ होना चाहिए। जो हितकर हो वह परिश्रम-प्रयत्न आदमी को करना चाहिए।

सम्यक् ज्ञान-दर्शन-चारित्र्य में पुरुषार्थ करें, उस पुरुषार्थ का महत्त्व है। आगम के सूत्र में कहा गया है—तप और संयम में पुरुषार्थ करो। सम्यक् पुरुषार्थ करना हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण सूत्र बन सकता है। विवेकपूर्ण सम्यक् पुरुषार्थ करो। बोलना भी एक चीज है, मौन रखना भी एक चीज है। यहाँ यह विवेक रखें कि यहाँ बोलना हितकर है या न बोलना हितकर है।

विवेक ही धर्म है। आदमी का विवेक

जागृत रहे। कवि ने कहा है कि विवेक एक चक्षु है। विवेकवतों की संगति करो। एक आँख है, तो जिंदगी का काम तो चल सकता है। विवेकवतों की संगति दूसरा चक्षु है। जिसके पास दोनों ही आँखें नहीं हैं, वो अगर अपराध में चला जाए तो उसे क्या दोष दें। जीवन में, कार्य में विवेक हो। पुरुषार्थ का आधार विवेक बन जाए। यह एक दृष्टांत से समझाया। विवेक केंद्रित पुरुषार्थ हो तो कार्य की निष्पत्ति जल्दी आ सकती है। अपने विवेक को काम में लें।

आज हम बिरमावल में आए हैं। मुनि सुधांशु से जुड़ा हुआ ग्राम है। 2009 में इसकी आचार्य महाप्रज्ञ जी से दीक्षा हुई थी। गौतम और सुधांशु दोनों भाई दीक्षित हुए थे। मुनि अनुशासन और मुनि मृदु की भी साथ में दीक्षा हुई थी। दो-दो भाईयों की दो जोड़ियाँ एक साथ दीक्षित हुए थे। ये चार नचिकेता मुनि थे।

मुनि सुधांशु भी अच्छा विकास करता रहे। मन में संघ सेवा की भावना रहे। अच्छी निष्ठा, अच्छा व्यवहार, चित्त में समाधि रहे। विवेकपूर्ण सम्यक् पुरुषार्थ में जितनी संभव हो शक्ति लगाते रहें। ज्ञान का प्रकाश रहे और साथ में संयम का ब्रेक रहे तो आगे विकास हो सकता है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

अध्यात्म योग की दिशा में सभी को आगे बढ़ना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

रतलाम बाहर-दिलीपनगर, 29 जून, 2021

29 जून, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस। जैन धर्म में योग का बड़ा महत्त्व है। उस योग और इस योग में फर्क है। योग पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने योग दिवस पर प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि योग आज का एक प्रचलित शब्द है। 29 जून का दिन तो योग के साथ मानो जुड़ गया है।

29 जून योग के द्वारा योग दिवस के रूप में अपनी पहचान बना चुका है। योग शब्द का जैन दर्शन में एक पारिभाषिक या विशेष अर्थ है—शरीर, वाणी और मन की प्रवृत्ति या व्यापार योग होता है। इस योग और उस योग शब्द में अंतर प्रचलित हो रहा है। यह एक प्रवृत्त्यात्मक योग है और योग निवृत्ति से भी जुड़ा हुआ है।

आज जिस योग के बारे में चर्चा हो रही है, वह योग शब्द एक साधना से जुड़ा हुआ है, योग साधना। कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य हेमचंद्र के ग्रंथ अभिधान चिंतामणी नाम माला में योग की परिभाषा दी गई है—'मोक्षो पायो योगो—' मोक्ष का उपाय-साधन योग है। जिसके द्वारा आत्मा को मुक्ति प्राप्त हो वह साधन योग है। वह उपाय है—सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र्य। यह रत्नत्रयी योग है, मोक्ष का उपाय है।

योग के अनेक आयाम हैं। आसन-प्राणायाम यह भी एक योग-साधना का अंग है। ध्यान भी योग

का अंग है। प्रेक्षाध्यान भी योग साधना का अंग है। अणुव्रत के अंतर्गत अहिंसा-सत्य-अचौर्य-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रह योग साधना का अंग है। जीवन में संस्कार, नियम अच्छा आचार नहीं है, वह तो एक अभाव की बात हो सकती पर प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि योग आज का एक प्रचलित शब्द है।

अध्यात्म के जगत में निवृत्ति की साधना भी एक योग साधना है। प्रेक्षाध्यान में अनेक प्रयोग हैं। हम बाहर से भीतर की ओर आएँ। हम इंद्रियों का संयम कर लें और कुछ भीतर में जाने का प्रयास करें। ये बहुत ऊँची योग साधना हो जाती है। सर्वेन्द्रिय संयम एक प्रयोग है।

संसार में जीना है तो बाहर जीना भी होता है। पर रहें भीतर में। प्रेक्षाध्यान के प्रयोग से समीप योग का प्रयोग करवाया। हम राग-द्वेष मुक्ति की दिशा में बढ़ने का प्रयास करें। प्रेक्षा यानी गहराई से देखना। देखने में प्रियता-अप्रियता का भाव नहीं। अध्यात्म योग की दिशा में हम सभी आगे बढ़ें। यह काम्य है।

आज हम आचार्यश्री नानेश के नाम से जुड़े हुए इस स्थान में आए हैं। यहाँ भी रहने वाले विद्यार्थी आदि जो भी हैं, उनमें अच्छे संस्कार पुष्ट होते रहें, मंगलकामना।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में सोनम बम्बोली, आचार्य नानेश छात्रावास के सह-संयोजक जेटोजी, रतलाम के अध्यक्ष अशोक दक ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि मनन कुमार जी ने किया।





व्यक्ति का चिंतन उसे सुखी या दुखी बना सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

रानीसिंह गाँव, १७ जून, २०२१



तेरापंथ के वर्तमान भिक्षु आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आज प्रातः झाबुआ जिले से विहार किया और रतलाम जिले में आज रानीसिंह गाँव में पधारें। प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए महामनीषी ने फरमाया कि हमारे पास शरीर, वाणी और मन ये तीन प्रवृत्ति के साधन हैं। शरीर से हमारा चलना, मिलना, खाना-पीना आदि कार्य होते हैं। वाणी से बोलते हैं और मन से स्मृति, कल्याण और चिंतन करते हैं।

जीवन में हमारे लिए शरीर, वाणी और मन का महत्व है। कोई भी प्राणी है, इन तीनों में से शरीर का होना तो जरूरी है। वाणी और मन के बिना तो काम चल सकता है। दुनिया में कितने प्राणी ऐसे हैं, जिनके पास मन है ही नहीं। अमनस्क जिनके होते हैं। कितनों के पास वाणी भी नहीं है। न वाणी है, न मन है। केवल शरीर है।

मन, वचन और काय योग होते हैं। इस तरह हम संसारी प्राणियों को तीन भागों में बाँट सकते हैं। अनंत प्राणियों के पास केवल शरीर है। कुछ प्राणियों के पास शरीर के साथ वाणी भी है। तीसरे प्रकार के कुछ प्राणी ऐसे हैं, जिनके पास ये तीनों होते हैं। केवल ज्ञानी तो न संज्ञी है न असंज्ञी है। उनसे ऊपर उठ जाते हैं।

मनुष्य भी दो प्रकार के होते हैं। संज्ञी और असंज्ञी या मन वाले और अमन वाले मनुष्य। हम मन वाले संज्ञी मनुष्य हैं, पंचेन्द्रिय हैं। हम शरीर, वाणी और मन इन तीनों साधनों से युक्त हैं। ये तीन साधन

साधना के भी साधन बनते हैं या पाप के साधन बनते हैं। धर्म के साधन बनते हैं या अधर्म के साधन बनते हैं। इन तीनों से दोनों बातें हो सकती हैं।

शरीर हमारा दिखाई देता है। वाणी हम सुनते हैं। मन हमारा ऐसे साफ दिखाई नहीं देता, भीतर है। परंतु मन में किसी के क्या आ रहा है, थोड़ा-थोड़ा भांपा जा सकता है। बाहर के संकेतों के द्वारा मन में क्या भाव होना चाहिए, इसका थोड़ा-थोड़ा अनुमान-ज्ञान ज्ञानी आदमी लगा सकता है।

भय, चिंता, आलस, अमन, सुख-दुःख हेत-अहेत। मन महीप के आवरण, दृग् दिवान कह देत।।

भीतर मन में भय या गुस्सा है, तो कुछ संकेत मिल सकता है। चिंता में है तो उसकी बैठने की मुद्रा से अनुमान लगाया जा सकता है। प्रसन्नता-अप्रसन्नता, मूढ़ का पता लग सकता है। आँखों, चेहरे व हाव-भाव आदि के द्वारा, शरीर की क्रिया से कुछ-कुछ अनुमान लग भी सकता है कि भीतर में इसके क्या मनोभाव चल रहा है।

बात से भी प्रबुद्ध-ज्ञानी आदमी पता लगा सकता है कि इसके मन में क्या होना चाहिए। मन एक ऐसा तत्त्व है, जिसके द्वारा बहुत सुंदर-अच्छा चिंतन किया जा सकता है। आदमी चिंतन से सुखी भी और दुःखी भी बन सकता है। हमारा चिंतन बढ़िया, प्रशस्त होगा, विचार अच्छे होंगे तो हम सुखी भी रह सकते हैं। चिंतन हमारा सकारात्मक है या नकारात्मक। यह एक

दृष्टांत से समझाया कि सुख-दुःख में समता रखनी चाहिए। जो है, उसे देखकर सुखी रहे। न होने का दुःख न करें। चिंतन हमारा प्रशस्त हो।

जीवन में अनुकूलता-प्रतिकूलता की परिस्थितियाँ तो आ सकती हैं, संघर्ष भी आ सकते हैं, परंतु आदमी को मनोबल, समता का भाव रखना चाहिए। आदमी किसी भी क्षेत्र में काम करे, अपने अच्छे सिद्धांतों पर चले। ईमानदारी-नैतिकता का बल रखे। दुनिया में मनी पावर, मैन पावर होते हैं, साथ में मोरल पावर भी रहे। मोरेलिटी पावर आदमी का मजबूत रहना चाहिए। बेईमानी से समझौता न करें।

ईमानदारी भी एक शक्ति है। सच्चाई में परेशानियाँ तो आ सकती हैं, विरोध संघर्ष, कठिनाईयाँ आ सकती हैं, परंतु सच्चाई और ईमानदारी परास्त नहीं हो

सकती। अंतिम विजय सच्चाई, ईमानदारी की होने वाली है। 'सत्यमेव जयते।' भारत हमारा देश है, उसके पास तीन संपत्तियाँ हैं—संत संपदा, पंथ संपदा और ग्रंथ संपदा।

संत संपदा से सदुपदेश मिलता रहे, पंथ संपदा से हमारा पथ प्रशस्त होता रहे और ग्रंथ संपदा से हमारा ज्ञान बढ़ता रहे। गृहस्थों के जीवन में मोरल वैल्यूज पुष्ट रहें। सच्चाई-ईमानदारी के प्रति अच्छी भावना रहे तो जीवन अच्छा रह सकता है। चेतना भी निर्मल रह सकती है।

आज रतलाम जिले में आना हुआ है। रतलाम जिले में हम कुछ दिन रहने वाले हैं। यहाँ नैतिक मूल्यों का अहिंसा-संयम का अच्छा विकास होता रहे।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में झाबुआ के सांसद गुमानसिंह ने कहा कि झाबुआ का पिछड़ापन रहने का मुख्य कारण नशा

है। गुरुदेव की कृपा से यहाँ नशामुक्ति अभियान में गति आई है। नवयुवक समझे हैं और नशा छोड़ने का संकल्प भी लिया है। जीवन विज्ञान भी यहाँ बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। उन्होंने कहा कि मैं भारत सरकार के शिक्षा मंत्री से निवेदन करूँगा कि वे शिक्षा में जीवन विज्ञान को प्रमुख स्थान दें।

पूर्व विधायिका संगीता चारेल, पूर्व विधायक पारस संकेलेचा, कृषि उपज मंडी के अध्यक्ष विजय चारेल ने अपनी भावना व्यक्त की। मालवा सभा की ओर से सभी का सम्मान किया गया। मालवा सभा के अध्यक्ष-मंत्री ने पूज्यप्रवर के सलाम जिले में पधारने पर स्वागत में अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि मनन कुमार जी ने किया।

लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गति भी उसके अनुरूप हो : आचार्यश्री महाश्रमण

सारंगी, १६ जून, २०२१



अनुकंपा के सागर आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः विहार कर सारंगी पधारें। प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए दायमूर्ति ने फरमाया कि आदमी जीवन जीता है। जीवन एक सामान्य रूप में जीया जाता है, जिसे हर प्राणी जीता है। सामान्य रूप में जीवन का व्यतीत होना सामान्य बात हो जाती है।

एक उद्देश्यपूर्ण जीवन होता है। जिसमें कोई लक्ष्य जीवन में प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ना है। वह जीवन एक विशिष्ट जीवन हो सकता है। महान जीवन हो सकता है।

दसवें आलिय की चूलिका में कहा गया है—दो शब्द हैं—अनुज्ञोत, दूसरा है—प्रतिज्ञोत। प्रवाह के साथ-साथ बहना अनुज्ञोतगामिता हो जाती है। प्रवाह के विरुद्ध चलना प्रतिज्ञोतगामिता हो जाती है। सामान्यतया आदमी भोग इंद्रियविषय सेवन के लिए, शरीर के लिए जीवन जीता है। इस प्रकार से जीवन जी लेना अनुज्ञोत का जीवन हो गया।

एक आदमी त्याग-संयम की दिशा में आगे बढ़ता है, यह आम मार्ग से अलग पथ है। त्याग मोक्ष का मार्ग है। मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ना प्रतिज्ञोतगामित्व होता है। राग का जीवन जीना सामान्य बात, त्याग का जीवन जीना विशेष बात है। आत्मरंजन, आत्मनुरक्त होना, योग का जीवन विशेष बात होती है। राग-भोग दुःख का कारण व त्याग सुख का कारण है। हम जीवन जीते हैं। गृहस्थ जीवन में

साधना भी की जा सकती है। एक गृहस्थ कैसे प्रतिज्ञोत की दिशा में आगे बढ़ सकता है। गार्हस्थ्य में भी त्याग और योग कैसे आचरण में आए। अवस्था-अवस्था में जीवन शैली का कुछ अंतर हो सकता है। इतली उम्र में साधना में अधिक समय जाता है, जिसे हर प्राणी जीता है। सामान्य रूप में जीवन का व्यतीत होना सामान्य बात हो जाती है।

सामायिक है, वह भी त्याग की दिशा में प्रस्थान-प्रयास होता है। व्यक्तिगत जीवन में संयम हो। नशामुक्ति हो, खान-पान में संयम हो। जितना संयम मिले, धार्मिक साधना करना, पानी का भी संयम हो। वाणी का संयम हो। अनावश्यक न बोलें। भाषा में कटुता न हो। वाणी में पटुता-चातुर्य हो। झूठ से बचें तो पाप से बचा जा सकता है।

गृहस्थ को भी अधिकार है, धर्म करने का। रात्रि भोजन से बचने का प्रयास हो। चौविहार की साधना करें। अहिंसा-संयम आत्म कल्याण के तत्त्व हैं। जमीकंद भक्षण से बचें। जीवन जीने का लक्ष्य हो जाए, मैं मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ूँ। गति भले मंद हो, पर बंद न हो। तो व्यक्ति कहीं पहुँच सकता है। चलने वाली चीटी सैकड़ों योजन जा सकती है। तेज उड़ने वाला गरुड़ एक जगह बैठा रहेगा तो आगे नहीं बढ़ पाएगा।

आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ बालावस्था में संत हो गए। एक लक्ष्य बना और कितना विकास किया। आगे पहुँच जीवन विशेष बात होती है। राग-भोग दुःख का कारण व त्याग सुख का कारण है। हम जीवन जीते हैं। गृहस्थ जीवन में

लक्ष्य हो जाए, मुझे इस दिशा में आगे बढ़ना है। लक्ष्य भी बढ़िया, पवित्र और निर्वंद्य हो। परम की तरफ बढ़ाने वाला हो।

लक्ष्य अनुरूप गति हो तो फिर आदमी लक्ष्य को प्राप्त हो सकता है या निकट कर सकता है। प्रयास करें हम आदर्श की तरफ आगे बढ़ें। अध्यात्म में मोक्ष हमारा परम लक्ष्य-आदर्श है। सम्यक् ज्ञान-दर्शन चारित्र्य की साधना करना उसका साधन है। इनकी साधना करने से हम आगे बढ़ सकते हैं। साधन साध्य बनते ही आत्मा मोक्ष में परिणित हो जाती है।

सारंग में जीवन में लक्ष्य अच्छा होना चाहिए। उसके अनुरूप प्रयास-गति होनी चाहिए। अनुज्ञोत से हटकर प्रतिज्ञोत की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास हो तो हमारे जीवन की अच्छी सार्थकता हो सकती है। आज हम सारंगी आए हैं। सारंगी सुरंगी बनी रहे। अच्छा रंग बना रहे। धर्म की दृष्टि से सारंगी का सुरंगीपणा बना रहे। लोगों में धर्म की भावना रहे, मंगलकामना।

पूज्यप्रवर के स्वागत, अभिवंदना में सारंगी तेरापंथी सभा अध्यक्ष, तेयुप के अध्यक्ष, महिला मंडल अध्यक्ष, ज्ञानशाला जानार्थी, सविता बम्बोली, महिला मंडल, महिला मंडल मंत्री, महिला मंडल की बहुओं ने, कन्या मंडल, तेयुप, मूर्तिपूजक महिला मंडल, संदीप तलेसरा (मूर्तिपूजक संघ), अजित बम्बोली ने अपने गीत-भावों से अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि मनन कुमार जी ने किया।

विवेक केंद्रित पुरुषार्थ से कार्य की...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इनके संसारपक्षीय नानाजी आनंदीलालजी भी मुझे स्मृति में आ रहे हैं। नानीजी सेवा करती रहती हैं।

सुधांशु के साथ में पहली बार आना हुआ है। सुधांशु चंद्रमा की तरह शीतल रहे। चंद्रमा की तरह प्रकाश भी करता रहे। दूसरों को भी प्रकाश देता रहे, अच्छी साधना चलती रहे। अच्छे तरीके से अच्छा काम करने की भावना रहे। नया समय है, नए तरीके से विकास होता रहे। सेवा, ज्ञान और स्वाध्याय का अच्छा विकास होता रहे। अनुकूलता-प्रतिकूलता किसी के आ सकती है, उसमें समता की साधना चलती रहे। हर स्थिति में शांति-चित्त समाधि रहे।

सुधांशु का जन्म दिवस भी जुड़ा हुआ है। २७ वर्ष के हो गए। खूब अच्छा काम हो। विरमावल के लोगों में खूब अचछी धर्म की भावना बनी रहे। शासन भक्ति-सेवा की भावना रहे। पुनः आत्म उत्थान की भावना पुष्ट होती रहे। अच्छा कल्याण का काम होता रहे।

मुनि सुधांशु कुमार जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में प्रकाश पीपाड़ा, धर्मचंद पीपाड़ा, सकल जैन श्री संघ से श्रेणिक पीपाड़ा, ज्ञानशाला की प्रस्तुत, कन्या मंडल, तेरापंथ महिला मंडल, साधुमार्गी महिला मंडल, सुरेश पीपाड़ा, विश्वास पीपाड़ा, स्कूल से गोपाल परमार, जितेंद्र पीपाड़ा, आयुष पीपाड़ा, ममता पीपाड़ा, विनीता पीपाड़ा, उत्सव प्रीति पीपाड़ा, सलोनी पीपाड़ा, कविता पीपाड़ा, कृतिका पीपाड़ा, ऋषिका पीपाड़ा, दैनिक पीपाड़ा, संयम बोहरा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि मनन कुमार जी ने किया।



मोक्ष की साधना के लिए अनासक्ति अपेक्षित होती है : आचार्यश्री महाश्रमण

करवड़, 15 जून, 2021



जैन धर्म के पुनरुद्धारक आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः विहार कर करवड़ पधारे। ज्योतिचरण ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी प्रवृत्ति करता है। दिनभर में हम कितने कार्य कर लेते हैं। कभी हम बोलते हैं, कभी हम खाते हैं, कभी हम पीते हैं, कभी हम पढ़ते हैं, कभी कुछ देखते हैं, कभी कुछ सुनते हैं। कितनी प्रवृत्तियाँ एक दिन में ही एक आदमी से हो जाती हैं।

पदार्थों का उपयोग भी करते हैं। कपड़े पहनते-ओढ़ते हैं। बर्तन आदि काम में लेते हैं। लेखन के लिए पेन-पेंसिल व कॉपी-डायरी काम में लेते हैं। अखबार व पत्र-पत्रिकाएँ देखते हैं। पदार्थों को भी हम काम में लेते हैं। यह भी एक बात है कि जीवन है तो प्रवृत्ति भी सामान्यतया करनी आवश्यक होती है। प्रवृत्ति सारी की सारी छूट जाए फिर जीवनकाल भी लंबा रहना मुश्किल है।

सारी प्रवृत्ति चौदहवें गुणस्थान में छूटती है। अयोगी केवली गुणस्थान। सारी प्रवृत्ति छूटी फिर वह केवली ज्यादा जिंदा भी नहीं रहता। पाँच हस्ताक्षरों का समय है और फिर मुक्ति में चले जाते हैं। यानी प्रवृत्ति-शून्य जीवन लंबा नहीं चलता। केवली का तो ये जीवन क्या? जन्म-मरण से छुटकारा मिल जाता है, जब संपूर्णतया निवृत्ति प्राप्त हो जाती है।

हमारे जीवन में प्रवृत्ति और निवृत्ति इन दो तत्त्वों का भी योग है। प्रवृत्ति के बीच-बीच में कुछ अंशों में निवृत्ति भी होती है। पदार्थों को हम काम में लेते हैं, प्रवृत्ति होती है। अब कर्मों का बंधन किस रूप में होता होगा। वो भी खासकर पाप कर्म का बंधन। पापकर्म के बंधन में एक महत्वपूर्ण बात है कि पदार्थों को काम में लेते समय या लेने से पहले-पीछे हमारे मन में आसक्ति की मात्रा कितनी है।

आसक्ति और अनासक्ति, प्रवृत्ति और निवृत्ति यह एक जोड़ा है। दो शब्द हैं—उपभोग और उपयोग। उपभोग यानी आसक्ति-युक्त पदार्थों को काम में लेना। उपयोग यानी आसक्ति-मुक्त पदार्थों को काम में लेना। आदमी पदार्थों का उपभोग न करे, उपयोग तो करना पड़ सकता है। शास्त्रकार ने सूखी मिट्टी और गीली मिट्टी के गोले से यह समझाया है। सूखी मिट्टी अनासक्ति के समान है।

गीली मिट्टी आसक्ति के समान है। गीली मिट्टी जैसे दीवार से चिपक जाती है, वैसे ही पाप कर्म हमारे आसक्ति से बंध जाते हैं। अनासक्ति है तो कर्मों का बंध होगा तो भी बहुत हल्का होगा।

दो प्रकार के बंध बताए गए हैं—सांपरायिक बंध और इर्यापथिक बंध।

पहले से दसवें गुणस्थान के जीवों के सांपरायिक बंध होता है। 99-92-93वें गुणस्थान में जो बंध होगा वो इर्यापथिक बंध है। 98वें गुणस्थान में तो बंध है ही नहीं। बंधन वहीं होता है, जहाँ योग होता है। योग है, वहीं लेश्या है।

लेश्या और योग का भी संबंध है। इनका साहचर्य रहता है। सयोगी, सलेश्यी और संबंध ये तीनों एक समान हो गए, अयोगी, अलेश्यी और अबंध एक हो गए। सकषाय जीव के जो बंध होते हैं, वो सांपरायिक बंध होता है। जहाँ जीव अकषाय है, वहाँ इर्यापथिक बंध है। 99-92-93वें गुणस्थान में केवल साता-वेदनीय का ही बंध होता है। वहाँ आसक्ति नहीं है। कषाय के बिना होने वाले बंध को टिकने का मौका नहीं मिलता।

कषाय कर्मों को टिकाने वाला एक आश्रय-घर है। कषायवस्था में होने वाला बंध लंबा रह सकता है। हम अपने जीवन में ध्यान दें कि पदार्थों का उपयोग तो करना पड़ सकता है, उपयोग-आसक्तिमुक्त सेवन न करें। पदार्थों को काम में लेना साधु और गृहस्थ दोनों के लिए होता है। धातव्य यह है कि उपयोग भले हो उपभोग न हो। आसक्ति न हो।

हम अनासक्ति के सूत्र को जीवन में स्वीकार कर लेते हैं, तो पाप कर्म के बंधन से आशा है, बहुत ही हमारा बचाव हो सकेगा। साधु को तो विचरते रहना चाहिए।

साधु कहीं भी ममत्व भाव न करे। जहाँ रहे, वहाँ आनंद में रहे। गृहस्थ भी ध्यान दे कि ममत्व को कैसे कम कर सके। परिवार में रहते हुए भी अनासक्ति रहे।

‘जे समवृष्टि जीवडा, करे कुटुंब परिपाल। अंतर दिल न्यारा रहे, ज्यों धाय रमावे बाल।।’ धाय माता की तरह रहे। ‘करणी आपो आप, कुण वेदो कुण बाप।’ मेरा ज्ञान-दर्शन मेरा है। कमलप्रज्ञ की तरह निलेंप रहे। इसी तरह परिवार, समाज, व्यापार में निलेंप-अनासक्ति रहे। आसक्ति दुःख को पैदा करती है। अनासक्ति से दुःख दूर या कम हो जाता है।

मोक्ष की साधना के लिए अनासक्ति अपेक्षित है। मोक्ष और मोह दोनों साथ नहीं हो सकते। दोनों विरोधी मार्ग हैं। आसक्ति छोड़ने का प्रयास करें। साथ में नहीं जाए वो मेरा कैसे हो सकता है। मेरी तपस्या, मेरे कर्म मेरे साथ जाएंगे। जो मोक्ष में साथ रहता है, वो मेरा है। हम अनासक्ति की दिशा में आगे बढ़ें।

आज करवड़ आए हैं। यहाँ के लोगों में खूब धर्म की भावना रहे, मंगलकामना।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में ज्ञानशाला की प्रस्तुति, महिला मंडल, महिला मंडल अध्यक्ष एवं श्रावक-श्राविकाओं ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

पैसे के लिए ईमानदारी की संपत्ति को नही लुटाना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

पेटलावद, 93 जून, 2021



त्रि-दिवसीय पेटलावद प्रवास का आज तीसरा दिन। तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी को थोड़ा लाभ मिले और ज्यादा नुकसान हो, ऐसा कार्य नहीं करे। यह तो एक नासमझी और मूढ़ता की बात है कि नुकसान ज्यादा और लाभ थोड़ा सा।

अल्प के लिए बहुत को खो देना, इस प्रकार का काम करने वाले तो विचार-मूढ़ मुझे लग रहे हैं, ऐसा एक श्लोक में कहा गया है। जैसे साधु के पास पाँच महाव्रत रूपी विशाल संपदा है। पहला महाव्रत है—सर्व प्राणतिपात विरमण। सर्व हिंसा से दूर-विरक्त रहना। दूसरा सर्व मूषावाद विरमण। तीसरा महाव्रत है—सर्व अदत्तादान विरमण। चौथा महाव्रत है—सर्व मैथुन विरमण और पाँचवा महाव्रत है—सर्व परिग्रह विरमण। ये पाँचों महाव्रतों का तीन करण, तीन योग से त्याग होता है।

प्रथम महाव्रत है—सर्व प्राणतिपात विरमण। उसके लिए साधु के अनेक छोटे-छोटे नियम बने हुए हैं। रात्रि भोजन नहीं करना न पानी पीना। ये पाँच महाव्रत हैं—ये अमृत्य हैं। पाँच कीमती हीरे हैं। साधु के पास इतनी बड़ी संपदा है कि स्थूल भाषा में मोक्ष को खरीदा जा सकता है।

इस महान संपदा को कोई साधु थोड़े में दे दे तो वह अल्प के लिए बहुत को खोने जैसी बात हो जाती है। ये शील व्रत और त्याग की संपदा साधु के पास है, जो बहुत फल देने वाली है। साधु मृत्यु के बाद या तो मोक्ष में जाता है या स्वर्ग-देवगति में जाता है। स्वर्ग मिलना तो एक भौतिक लाभ है। मोक्ष मिलना परम लाभ है। आत्मा की उज्वलता का होना बड़ा लाभ होता है।

कोई निदान कर ले, मेरी इस साधु जीवन की साधना का लाभ मिले तो मैं आगे के किसी जन्म में चक्रवर्ती—बड़ा राजा बन जाऊँ। ऐसी इच्छा-संकल्प कर लें और उसकी आलोचना न करें, इसका मतलब है कि साधुपन की संपदा को थोड़े के लिए लुटा देना यह एक नासमझी और मूढ़ता की बात होती है।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

विश्वास और दोस्ती योग्य व्यक्ति के साथ करें : आचार्यश्री महाश्रमण

बामनिया, 18 जून, 2021



तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः विहार कर बामनिया पधारे। प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए परम पावन ने फरमाया कि पुरुष! स्वयं का मित्र स्वयं तू है, फिर क्या बाहर मित्र खोजता है।

ऐसी ही बात आगम में अन्यत्र कही गई है कि आत्मा मित्र है और आत्मा अमित्र है। दुष्प्रवृत्ति में लगी हुई आत्मा हमारी हमारी मित्र बन जाती है। हमें दो नयों पर ध्यान देना चाहिए। जैन दर्शन में दो नय-दो वृष्टिक्रम बताए गए हैं—निश्चय नय और व्यवहार नय।

अनेक क्रोधों से बात को, स्थिति को देखा जा सकता है। तुम ही तुम्हारे मित्र हो, यह बात सही है, निश्चय नय के परिप्रेक्ष्य में। परंतु अगर व्यवहार की भूमिका पर और व्यवहार जगत में देखा जाए, व्यवहार नय की दृष्टि से तो दूसरा कोई हमारा मित्र बन सकता है, हम भी किसी के मित्र बन सकते हैं।

एक नैश्चयिक सच्चाई होती है और एक व्यावहारिक सच्चाई होती है। जैसे कोई चलता है, तो कहता है, गाँव आ गया पर निश्चय की दृष्टि से देखें तो गाँव क्या आ गया तुम गाँव के निकट आ गए। व्यवहार की भाषा में गाँव आ गया, ऐसा कहा जा सकता है। बात दोनों ही सत्य है।

शास्त्रकार ने हमें जो बताया है, वो एक परमार्थ की बात का नैश्चयिक सत्य प्रकट कर दिया है। दूसरों को मित्र बनाना एक भूमिका तक तो हो सकता है। एक भूमिका से आगे बढ़ने पर कौन मेरा मित्र? केवलज्ञानी के लिए कौन शत्रु और कौन मित्र। वो तो अपनी साधना में संलग्न है। सामान्य आदमी कह सकता है, कि यह मेरा मित्र है।

एक भूमिका पर एक बात सही है, पर दूसरी भूमिका पर वह बात सही न भी ठहरे। तुम तुम्हारे शत्रु भी बन सकते हो। हमारी आत्मा जितना बड़ा शत्रु बन सकती है, दूसरा कोई नहीं बन सकता। जो नुकसान हमारी दुःखिता बनी आत्मा कर सकती है, वह नुकसान एक कंठ काटने वाला दुश्मन भी नहीं करता।

मृत्यु जब सामने आती है, तब वह जानेगा कि मैंने गलत काम किए हैं। अब मेरी आत्मा शत्रु बन गई है। पश्चात्ताप करेगा कि मैंने ये-ये पाप किए हैं। एक आदमी क्षमावान है, तो इस माने में उसकी आत्मा मित्र बन गई। मृदु है, अहंकार नहीं है, सरल-ऋजु है, छल-कपट नहीं है, संतोष में है, लालच-लोभ नहीं ज्यादा, बाह्य आकर्षण नहीं है, अहिंसा में रत है, संयमी

है, तपस्वी है, उसकी आत्मा उसकी मित्र बन गई। ये मित्र आत्मा के लक्षण है। इनके विपरीत जो आचरण है, उसकी आत्मा उसकी शत्रु है।

हमारे लिए धातव्य है कि हम हमारी आत्मा को ज्यादा से ज्यादा अपना मित्र बनाने का प्रयास करें। संसार में जो मित्र होते हैं, उनमें भी ध्यान दें कि मित्र किसको बनाएँ? संस्कृत में नीति का श्लोक है, उसमें कहा गया है कि एक साथ ज्यादा दोस्ती करना सामान्यतया बढ़िया नहीं। सूर्योदय के पूर्वार्ध में हमारी छाया लंबी होती है। धीरे-धीरे समय बढ़ते छाया छोटी हो जाएगी। ज्यों-ज्यों सूर्य ढलेगा धीरे-धीरे हमारी छाया लंबी होती जाएगी। दोस्ती भी वैसी ही है। दोस्ती मध्याह्न के सूर्य के बाद की तरह होनी चाहिए।

जो खल-दुर्जन आदमी है, उसकी दोस्ती सूर्योदय के समय वाले सूर्य के जैसी होती है। सज्जन आदमी की दोस्ती मध्याह्न से सायंकाल वाले सूर्य के समान होगी। दुर्व्यवहार किसी के साथ मत करो। सद्व्यवहार सबके साथ करो। विश्वास और दोस्ती किसी-किसी के साथ करो, सबके साथ नहीं। योग्य आदमी के साथ करो।

बुरे आदमी की संगति में रहने की अपेक्षा अकेला रहना कुछ अंशों में ज्यादा बढ़िया है। एकला बलोरें। योग्य या समान आदमी न मिले तो पापों और विषयों का वर्जन करते हुए अकेले चलें। मित्र कोई बात खराब कह दे तो उसे स्वीकार मत करो, उसे मना कर दो। मनुहार को बड़ी मिटास के साथ अस्वीकार किया जा सकता है। हर मनुहार मानना जरूरी नहीं है।

ये मित्र जगत है। मित्र कैसा हो, उसके छः लक्षण बताए गए हैं। देना और लेना का संबंध हो, मित्र के सामने गोपनीय बात खोलकर बोल सकते हैं। उसकी गुप्त बातें पूछी भी जा सकती हैं। मित्र के घर पर जाकर निःसंकोच खाना खाया जा सकता है और मित्र को निःसंकोच खाना खिलाते हैं, दूसरा कोई नहीं बन सकता। जो नुकसान हमारी दुःखिता बनी आत्मा कर सकती है, वह नुकसान एक कंठ काटने वाला दुश्मन भी नहीं करता।

पूज्यप्रवर के स्वागत-अभिवंदना में स्थानीय सभाध्यक्ष महेंद्र मेहता, महिला मंडल अध्यक्ष उच्चव बन्ध, वर्धमान स्थानकवासी संघ से विमल मूषा, राजेश बन्ध, कमलेश बन्ध, कन्या मंडल, महिला मंडल, राजमल मेहता, सात्त्विक बन्ध, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन मुनि मनन कुमारजी ने किया।



नशा छोड़ने से स्वयं के साथ परिवार का भी कल्याण हो सकता है : आचार्यश्री महाश्रमण

पेटलावद, 19 जून, 2021



अहिंसा यात्रा से जन-मन को पावन करने वाले तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः त्रिदिवसीय प्रवास हेतु पेटलावद पधारे। प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए परम पावन ने फरमाया कि अहिंसा यात्रा परमपूज्य महाप्रज्ञ जी ने भी की थी और वर्तमान में भी अहिंसा यात्रा चल रही है। वर्तमान की अहिंसा यात्रा के तीन सार्वजनिक कार्य हैं। तीन सूत्रों का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

पहला सूत्र है—सद्भावना यानी जाति संप्रदाय आदि को लेकर दंगा-फसाद, मारकाट, हिंसा-हत्या में भाग नहीं लेना। दूसरा सूत्र है—नैतिकता यानी अपने कार्य में बेईमानी नहीं करना। प्रामाणिकता-पारदर्शिता रखना। तीसरा सूत्र है—नशामुक्ति। शराब, सिगरेट, बीड़ी, गुटखा, खैनी आदि नशीले पदार्थों के सेवन से बचना। नशामुक्ति का संकल्प एक संयम का संकल्प है।

गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन शुरू किया, आचार संहिता निर्मित हुई। उस आचार-संहिता में अनेक नियम हैं। अणुव्रत का एक आयाम है—नशामुक्ति। कुछ लोग नशे की गिरफ्त में आ जाते हैं। नशे की लत पड़ने से उस पदार्थ को छोड़ना बड़ा मुश्किल सा हो सकता है। पहले आदमी शराब पीता है, फिर शराब आदमी को पीने लग जाती है। वही हाल गुटखा, बीड़ी-सिगरेट का है।

श्लोक में कहा गया है—भोगों को हमने क्या भोगा, भोगों ने हमको भोग लिया। काल क्या बीता, हम खुद बीत गए। तप नहीं तपा, हम खुद संतप हो गए। लूणा बूड़ी नहीं हुई, हम बुढ़े हो गए। नशीले पदार्थ पहले आदमी खाता-पीता है, फिर ये पदार्थ मानो आदमी को खाने-पीने लग जाते हैं।

नशे के कारण से अनेक समस्याएँ

पैदा हो सकती हैं। असंयम है, आसक्ति है, तो आत्मा का नुकसान हो जाता है। आत्मा कर्मों से आवद्ध हो जाती है। प्रासंगिक और भी समस्याएँ पैदा हो सकती हैं। एक प्रसंग से समझाया कि नशा छोड़ देने से आर्थिक बचत हो सकती है। नशा करने से कभी गरीबों की गरीबी नहीं मिट सकती है।

नशा छोड़ने से परिवार की समस्या का समाधान हो सकता है। संत पुरुषों की प्रेरणा से लोग नशा करना छोड़ते भी हैं। आत्मा के ऊर्ध्वारोहण के लिए आदमी नशे का परित्याग करे तो जीवन के लिए एक कल्याण की बात हो सकती है। नशेड़ी आदमी का जीवन भी अस्त-व्यस्त हो सकता है।

अणुव्रत की विचारधारा संयम की विचारधारा है। नैतिकता की विचारधारा है। संयम और नैतिकता की बात आदमी समझे और अपने जीवन में उतारे। अनेक समस्याओं से निजात मिल सकती है और नई समस्याओं को पैदा होने का मौका भी नहीं मिलता है।

संस्कृत का श्लोक है कि जो मद्यपान करने वाले लोग हैं, उनका चित्त भ्रंत हो जाता है। चित्त की भ्रांति से आदमी पापाचार-अत्याचार में, हिंसा आदि में चला जाता है। पाप करके मनुष्य दुर्गति को प्राप्त हो जाते हैं। इसलिए मद्य-शराब न खुद को पीना चाहिए न दूसरों को पीने के लिए देना चाहिए।

नशे की आदत पड़ जाती है, बाद में कई बार उसे छोड़ना भी बड़ा मुश्किल हो सकता है। चाहे कितने संकल्प दिला दो, छूटती ही नहीं है। कितने लोग संतों की प्रेरणा से संकल्प लेकर नशा छोड़ते भी हैं। संकल्प में बल हो, चेतना में विरक्ति आ जाए तो लिए हुए त्याग-संकल्प को निभाया भी जाता है।

संतपुरुष, त्यागी महात्मा से लिए गए संकल्प का महत्त्व होता है, लोग उस संकल्पों

का पालन भी करते हैं। संतों के त्याग और वैराग्य विचारों का भी प्रभाव होता है। त्यागी-वैरागी आदमी होता है, विरागी इस माने में भागी होता है, अध्यात्म का अनुरागी होता है, ऐसे व्यक्ति की प्रेरणा व वाणी भी एक आदमी को भावित करने वाली बन सकती है।

सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति ये त्रि-सूत्री कार्यक्रम हमारी अहिंसा यात्रा में यथासंभव चलाया जा रहा है।

आज पेटलावद आए हैं, सन् 2008 में भी पेटलावद आना हुआ था। यहाँ की जनता में, श्रावक-श्राविकाओं में खूब धार्मिक चेतना पुष्ट बनी रहे। अच्छा संयम का विकास होता रहे, मंगलकामना।

पूज्यप्रवर के स्वागत व अभिवादन में सचिन, रेखा पालरेचा व उनकी टीम, विनोद भंडारी, सांसद गुमानसिंह दामोर, सुशील (एसडीएम), निर्मला भूरिया (पूर्व राज्यमंत्री), नगर अध्यक्ष मनोहरलाल भटेवरा, सभा मंत्री लोकेश भंडारी, महिला मंडल अध्यक्ष मनीषा पटवा, तैपुप अध्यक्ष रूपम पटवा, ज्ञानशाला जानार्थियों की प्रस्तुति, झमकमल (अणुविभा) वैभव कुमार निमजा (पूजा गार्डन से), अंशिका मेहता, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाएँ, सूज कोंटारी, निमजा परिवार की बहनों ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, इधर अणुव्रत, अहिंसा का प्रचार-प्रसार यह जितना हो सके अणुव्रत विश्व भारती के बैनर के तले जितना झावुआ जिला में विकास हो। सांसद गुमानसिंह जी है, अपना अध्यात्म का नैतिकता, संयम का, अहिंसा का प्रचार-प्रसार हो सके। ये आदिवासी क्षेत्र है, इन लोगों में भी आध्यात्मिक चेतना जागे अहिंसा की दिशा में आगे बढ़े। अच्छा काम होता रहे।

कार्यक्रम का संचालन मुनि मनन कुमार जी ने किया।

हर असफलता से सफलता की प्रेरणा ली जा सकती है : आचार्यश्री महाश्रमण

पेटलावद, 19 जून, 2021



पेटलावद का त्रि-दिवसीय प्रवास का दूसरा दिवस। महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि यह पुरुष! अनेक चित्त वाला होता है। आदमी के भीतर एक भावों का जगत है और इस चित्त के, मन के चित्रपट पर कभी अच्छे तो कभी बुरे भाव उभरते हैं।

प्रश्न होता है कि ये नियामक-संचालक कौन है? ऐसा प्रतीत होता है कि मोहनीय कर्म का इसके साथ गहरा संबंध है। जब-जब मोहनीय कर्म प्रभावी होता है, हावी होता है, हमारे भीतर कर्म आवद्ध है मोहनीय कर्म ही इसका संचालक है।

जैन दर्शन कर्मवाद को मानता है। यह बहुत महत्त्वपूर्ण और प्रमुख सिद्धांत है। कर्म की अपनी व्यवस्थाएँ-नियम हैं। किस कर्म की कितनी स्थिति, कितना अबाधकाल आदि-आदि हमारे भीतर दुर्भाव उभरते हैं, तो मानना चाहिए, ये मोहनीय कर्म अभी प्रभावी है। उसके त्राव से भाव खराब हो रहे हैं।

मोहनीय कर्म का विलय या अभाव होता है तो आदमी के भाव अच्छे रह सकते हैं। भाव के बाद आदमी के योग के साथ भी मोहनीय कर्म जुड़ा रहता है। दो शब्द हैं—उदय भाव और क्षयोपशम भाव। सामान्य आदमी के जीवन में जब मोहनीय कर्म का उदय होता है तो भाव खराब हो जाते हैं। जब मोहनीय कर्म का क्षयोपशम भाव-हलकापन रहता है तो फिर वे भाव अच्छे रूप में उभर सकते हैं।

मोहनीय कर्म का प्रभाव या अभाव भाव का निर्णायक है। हमारे भीतर का मोहनीय कर्म कभी-कभी विशेष उभार का भाव आ जाता है। आदमी शांत बैठे हैं, किसी ने आकर अंतशंठ बोलना शुरू कर दिया तो आदमी उत्तेजित हो गया। निमित्त मिला और गुस्सा प्रकट हो गया। मोहनीय कर्म को उभारने में ये बाहर के निमित्त सहयोगी बन सकते हैं। पर मूल उपादान तो भीतर में है।

संयोग या प्रभाव कह दें उससे गुस्सा उभर आता है और मोहनीय कर्म के वियोग या अभाव से आदमी शांत रहता है। इस तरह हमारे भाव जगत का संचालक-व्यवस्थापक मोहनीय कर्म है।

बुरे भावों को कैसे आने से रोका जाए? बुरे भावों को रोकने के लिए अध्यात्म की साधना की अपेक्षा होती है। ऐसा मनन, चिंतन, अनुप्रेक्षा, स्वाध्याय आदि आध्यात्मिक प्रयोग, जिनसे हम अपने मन को मलिन भावों से संयुक्त होने से बचा सकते हैं।

मोहनीय कर्म का विपाक-उदय हुआ, मन दूषित हो गया तो हमें विनम्र युद्ध करना चाहिए। मोहनीय कर्म अपना प्रभाव दिखा सकता है, तो हमारी शुद्ध चेतना अपना प्रभाव क्यों नहीं दिखा सकती। मन में गुस्सा आने लग गया, तो आदमी सोचे में मौन हो जाऊँ। मौन रहने का प्रयास करना, शुद्धता की ओर से उस गुस्से को रोकने का प्रयास है।

मन ही मन जप करना शुरू कर दें उससे हृण कोहं। उपशम से क्रोध का नाश करो। यह जप उस मोहनीय कर्म को नष्ट करने का प्रयास करेगा। मोहनीय कर्म चेतना की अशुद्धता का अंश है और मोहनीय कर्मविहीन जो शुद्ध चेतना है, वह चेतना की शुद्धता का अंश है। यह शुद्धता और अशुद्धता में संघर्ष होता है। युद्ध में किसी की भी विजय हो सकती है। युद्ध करने वाला डरे नहीं, विजय शुद्धता से कभी भी मिल सकती है।

यह आत्म-युद्ध की बात है। अपने आपसे युद्ध करो, बाह्य युद्ध से क्या मतलब। युद्ध करने वाले के पास मनोबल व युद्ध की सामग्री भी चाहिए तो युद्ध में सफलता मिल सकती है। अगर असफलता मिल भी जाए तो भी युद्ध करना अच्छी बात है। भगोड़ा बनना मरने से भी खराब चीज है। समरांगण में भागे क्यों?

कहीं बलवान जीव हो जाता है, तो कहीं ये मोहनीय कर्म बलवान हो जाता है। मोहनीय कर्म को पछाड़ने का प्रयास न हो तो यह अनंत काल चलता रहेगा। प्रयास होगा तो एक दिन तो समाप्त होगा ही। हारकर निराश होकर बैठे नहीं। एक बार फिर प्रहार करो। हर असफलता से सफलता की प्रेरणा भी ली जा सकती है। असफलता के कारणों का चिंतन कर उनका निराकरण करें।

चाहे युद्ध हो या चुनाव हो, जीवन भी हमारा एक समरांगण है। आध्यात्मिक युद्ध भी होता रहे। कुछ कदम आगे तो बढ़े। हार-हार में और जीत-जीत में अंतर हो सकता है। इस जीवन में अच्छा पुरुषार्थ करते रहें तो विजय की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

ज्ञानशाला, महिला मंडल व कन्या मंडल की सुंदर प्रस्तुति हुई। पूज्यप्रवर की अभिवंदना में मूलचंद कासवां, पवन भंडारी, प्रदीप पटवा, महेश भंडारी, संगीता-अनिता भंडारी, श्रेया पटवा, मुदित पटवा, निर्मला पटवा, ललिता देवी भंडारी, सचिन ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि मनन कुमार जी ने किया।



अभातेयुप योगक्षेम योजना

सत्र 2019-21

* अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई साथीगण	(₹75,00,000)
* अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(₹31,00,000)
* श्री मदनलाल महेन्द्र तातेड़, मुम्बई	(₹13,00,000)
* श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडून्-इस्लामपुर	(₹11,00,000)
* श्री अशोक श्रेयांश बरसेचा, तारानगर-हैदराबाद	(₹11,00,000)
* श्री फतेहचंद-संतोष देवी, धीरज, पूजा, अहम सेठिया, लुधियाना	(₹5,51,000)
* श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(₹5,00,000)
* श्री उमरावमल, प्रमोद, महेन्द्र, नरेन्द्र छाजेड़, रामगढ़ शेखावाटी-कोलकाता-जयपुर	(₹5,00,000)
* श्री माणकचंदजी सतीशजी ललितजी चोरड़िया (अमराईवाड़ी ओडव)	(₹5,00,000)

★ जीवन का सार है सच्चाई। दुनिया में यथार्थ भाव आज भी जीवित है। कुछ लोग ऐसे मिलेंगे जो यथार्थ की आराधना करने का प्रयास करते हैं।

—आचार्य श्री महाश्रमण

5



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स

21 जून - 4 जुलाई, 2021

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा दिवस के विविध कार्यक्रम युवा शक्ति के आदर्श हैं आचार्यश्री महाश्रमण जी

गंगाशहर

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप की ओर से आचार्यश्री महाश्रमण जी के ४८वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में युवा दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम प्रभारी मांगीलाल बोथरा ने बताया कि तेयुप द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी का जन्मोत्सव एवं दीक्षा दिवस उत्साह एवं आध्यात्मिकतापूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम के सहप्रभारी अशोक महनोट ने बताया कि तेयुप के ४८ युवा साथियों ने इस अवसर पर ४८ त्याग और संकल्प के प्रत्याख्यान किए। इसमें एक त्याग से लेकर ४८ त्याग तक के संकल्प निर्धारित किए हुए थे।

तेयुप के अध्यक्ष पवन छाजेड़ ने बताया कि युवा दिवस के उपलक्ष्य पर सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं के साथ अनेक परिवारजनों ने अपने आराध्य को तप, त्याग और संकल्प की श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

सहमंत्री भरत गोलछा ने बताया कि आचार्यश्री की ईगितानुसार चलने वाली युवा शक्ति संपूर्ण देश में धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में समाज एवं संपूर्ण राष्ट्र के लिए अपना योगदान दे रही है।

इचलकरंजी

आचार्यश्री महाश्रमण जी का ४८वाँ दीक्षा दिवस युवा दिवस के रूप में आध्यात्मिक उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर अभातेयुप द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी को आध्यात्मिक संकल्पों की भेंट अर्पित करने की सुंदर कल्पना 'संकल्पों का कल्पवृक्ष' नाम से समग्र परिवर्तों के समक्ष रखी गई।

इसी कड़ी में तेयुप, इचलकरंजी के आह्वान पर स्थानीय श्रावक समाज ने अपने आराध्य के श्रीचरणों में हजारों आध्यात्मिक संकल्प उपहृत किए। अपने गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पित श्रावक समाज से कुल १०६ लोगों ने कुल ५२१ एक दिवसीय संकल्प एवं २८ लोगों ने एक वर्ष के लिए कुल ५८ संकल्प ग्रहण कर अपनी श्रद्धा भावना अभिव्यक्त की। ३ साल के बालक से लेकर ६० वर्ष के बुजुर्गों तक सभी ने आध्यात्मिक संकल्पों को ग्रहण किया।

अभातेयुप अध्यक्ष सदीप कोठारी एवं राष्ट्रीय नेतृत्व के प्रति इस सुंदर 'संकल्पों का कल्पवृक्ष' अभियान प्रस्तुत करने के लिए तेयुप इचलकरंजी अध्यक्ष मुकेश भंसाली ने हार्दिक आभार प्रकट किया। उन्होंने इचलकरंजी के संपूर्ण श्रावक-श्राविका समाज के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सभी संकल्पकर्ताओं के प्रति साधुवाद दिया। निवर्तमान अध्यक्ष प्रवीण भंसाली और टीम ने जिस तरह इस अभियान के प्रचार एवं प्रस्तुतिकरण का

कार्य संपादित किया उसके लिए उनके प्रति साधुवाद किया।

गुवाहाटी

अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी के ४८वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में युवा दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र सेठिया ने बताया कि युवा शक्ति द्वारा इस अवसर पर सैकड़ों त्याग और संकल्प के प्रत्याख्यान किए गए। युवा दिवस के उपलक्ष्य में त्याग और संकल्प के आह्वान के साथ ही संपूर्ण धर्मसंघ में अपने आराध्य को त्यागमय भेंट देने की होड़ लग गई, जिसमें एक त्याग से लेकर ४८ त्याग तक के संकल्प लिए गए।

परिषद के सदस्यों एवं संपूर्ण समाज ने प्राप्त जानकारी तक १००२ से अधिक संकल्प किए। इस कार्यक्रम में संगठन मंत्री तरुण बेद एवं कार्यकारिणी सदस्य आनंद सुराणा का विशेष सहयोग रहा।

विजयनगर

अभातेयुप निर्देशित संकल्पों के कल्पवृक्ष के अंतर्गत तेयुप द्वारा युवा दिवस के अवसर पर त्याग और संकल्प का आह्वान किया गया। जिसमें एक दिवसीय संकल्प से लेकर वर्ष पर्यंत ४८ त्याग तक के प्रत्याख्यान किए गए। तेयुप अध्यक्ष पवन मांडोट ने साध्वी प्रमिला कुमारी जी के दर्शन कर उन्हें युवा दिवस पर अभातेयुप एवं तेयुप द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी प्रेषित की। साध्वीश्री जी ने युवकों एवं श्रावक समाज द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की।

अभातेयुप निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दिनेश पोखरना सहित परिषद के पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्य एवं संपूर्ण श्रावक-श्राविका समाज ने कई संकल्प लिए। तेयुप मंत्री देवांग बेद ने परिषद द्वारा आगामी कार्यक्रमों के बारे में बताया।

राजारजेश्वरी नगर

अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में युवा दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष नरेश बांठिया ने जानकारी दी कि युवा शक्ति द्वारा कुल २२५०८५० त्याग और संकल्प के प्रत्याख्यान किए गए। युवा दिवस के उपलक्ष्य में त्याग और संकल्प के आह्वान के साथ ही संपूर्ण धर्मसंघ में अपने आराध्य को त्यागमय भेंट देने की होड़ लग गई, जिसमें एक दिन के त्याग से लेकर एक वर्ष तक के संकल्प लिए गए।

तेयुप सदस्यों एवं तेरापंथ समाज के कुल १५१ सदस्यों का सहयोग रहा, जिसमें अभातेयुप से दिनेश मरोटी, डॉ० आलोक

छाजेड़, संजय बेद तथा परिषद के पदाधिकारीगण एवं कार्यसमिति सदस्यों ने भी त्याग और संकल्प की भेंट की।

तेयुप मंत्री धर्मेन्द्र नाहर ने बताया कि आचार्यश्री महाश्रमण जी के ४८वें दीक्षा दिवस के अवसर पर अभातेयुप द्वारा एक सुरमयी शाम 'गुरु महाश्रमण के नाम' भक्ति संध्या फेसबुक लाइव पर आयोजित की गई, जिसमें परिषद के मधुर गायक कलाकार की युगल जोड़ी गुलाब बांठिया एवं देवेन्द्र नाहटा ने गीत को प्रस्तुति देकर हजारों श्राताओं का मन मोह लिया।

सिकंदराबाद

साध्वी जिनरेशा जी व साध्वी निर्वाणश्री जी के सान्निध्य में 'संयम रत्न' की महत्ता उजागर हुई। साध्वी जिनरेखा जी व साध्वी निर्वाणश्री जी के संयुक्त सान्निध्य में साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी द्वारा रचित गीत की भावपूर्ण प्रस्तुति को विभिन्न माध्यमों से जन-जन तक पहुंचाया गया। गीत के सह-संगान में साध्वी मधुरयशा जी, साध्वी योगक्षेमप्रभा जी, साध्वी श्वेतप्रभाजी, साध्वी धवलप्रभा जी, साध्वी लावण्यप्रभा जी, साध्वी कुंदनयशा जी, साध्वी मुदितप्रभाजी, साध्वी मार्दवयशा जी व साध्वी मधुरप्रभा जी सहित ग्यारह साध्वियों ने आचार्यप्रवर के प्रति अपनी विनम्र भावाभिव्यक्ति दी।

साध्वी निर्वाणश्री जी के शब्दों में दीक्षा जीवन के नए आयाम का उद्घाटन है। यह जीवन रूपोत्तरण की प्रक्रिया है। इस महापथ पर प्रस्थित हो आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भारतीय ऋषि परंपरा को गौरवान्वित किया है।

साउथ हावड़ा

आचार्यश्री महाश्रमण जी का दीक्षा दिवस युवा दिवस के रूप में मनाया गया। अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा समग्र समाज के माध्यम से पूज्यप्रवर के ४८वें दीक्षा दिवस पर सभी ४८ संकल्पों को परिपूर्ण करते हुए कम-से-कम एक संकल्प स्वीकार कर पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में समता रस वर्षा द्वारा श्रद्धा भक्ति समर्पित की।

साउथ हावड़ा से कुल ७५ श्रावक-श्राविकाओं ने १५०१ संकल्प लिए। इस क्रम में जुड़ने हेतु परिषद परिवार सभी श्रावक-श्राविकाओं एवं साउथ हावड़ा तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेयुप एवं तेकिर्म सदस्यों, टीपीएफ का आभार प्रकट करती हैं। परिषद के सहमंत्री भानुप्रताप चोरंडिया, संगठन मंत्री अमित बेगवानी, संयोजक हितेंद्र बेद ने अथक प्रयास कर संकल्पों के कल्पवृक्ष को संकल्प रूपी फलों से लबालब कर दिया। परिषद उनके द्वारा किए गए कार्य के लिए साधुवाद देती हैं।



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

नवीन प्रतिष्ठान शुभारंभ

सूरत।

रामसिंह का गुड़ा निवासी, सूरत प्रवासी संजय गादिया के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक गौतम वैदमूथा, विनीत साममुखाने विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानंद संपन्न करवाया। संस्कारकों की प्रेरणा से सभी ने अपने सामर्थ्य अनुसार त्याग-प्रत्याख्यान किया।

संजय गादिया व उनके पूरे परिवार ने संस्कारक व सभी परिवारिकजनों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत द्वारा मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

शिलान्यास संस्कार

वापी।

वापी स्थित नामधा क्षेत्र में वापी के पूर्व सभा अध्यक्ष रमेश कोठारी के नए प्रोजेक्ट का भूमि पूजन जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित किया गया। कार्यक्रम में अभातेयुप राज्य प्रभारी, द्वी श्रेणी संस्कारक संजय भंडारी एवं सह-संस्कारक कुलदीप कोठारी ने संस्कार विधि को संपन्न कराया।

सर्वप्रथम नवकार मंत्र से इस विधि की शुरुआत हुई, फिर मंत्रों का उच्चारण किया गया। मंगलभावना पत्रक का वितरण किया गया तथा मंगलभावना यंत्र की स्थापना की और अन्य वीज मंत्रों से इस विधि को संपन्न कराया।

वैक्सीनेशन कैंप का आयोजन

साउथ कोलकाता।

तेरापंथ सभा, महिला मंडल एवं टीपीएफ के संयुक्त तत्वावधान में कोविड-१८ वैक्सीनेशन कैंप का आयोजन किया गया। तेरापंथ भवन में साध्वी स्वर्णरेखा जी के मंगलपाठ के साथ कैंप की शुरुआत की गई। कैंप १८ वर्ष एवं ऊपर के लोगों के अग्रिम रजिस्ट्रेशन वाले ३१० लोगों को लगाया गया वैक्सीन।

अध्यक्ष मनोज नाहटा के नेतृत्व में अनेक पदाधिकारीगण एवं संपूर्ण युवाशक्ति ने कैंप में सेवाएँ दी।

पैसे के लिए ईमानदारी की..

(पृष्ठ ३ का शेष)

कोई साधु बन पाँच महाव्रत स्वीकार कर लिए पर बाद में मन कमजोर हो गया, साधुपन छोड़ घर चला गया तो भी उसने उस साधुपन की संपदा को थोड़े सांसारिक भोगों के लिए बड़ी संपदा को खो दिया। आप लोग गृहस्थ हैं, व्यापार-धंधा करते हैं। कुछ पैसे के आकर्षण से कार्य में बेईमानी कर लेते हैं। हिसाब-किताब में गड़बड़ी कर देते हैं, उस पैसे की संपदा के लिए ईमानदारी की महत्त्वपूर्ण संपदा को खो देते हैं।

गृहस्थों के लिए पैसा एक संपत्ति है, तो ईमानदारी भी एक संपत्ति है। पैसे के लिए ईमानदारी की संपत्ति को नहीं लुटाना चाहिए। थोड़े के लिए बहुत कोन खोएँ। यह एक दृष्टांत से समझाया कि एक कांकिणी के लिए हजार कारसापण खोने की बात हो जाती है। मूल बात आध्यात्म की है कि थोड़े से भोगों के लिए अपना लिया हुआ त्याग-नियम-संकल्प है, उसको खोना नहीं चाहिए।

आचार्य भिक्षु लोगों को तत्त्व बोध ज्ञान देते थे। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत के माध्यम से लोगों को समझाया। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने भी अहिंसा यात्रा की थी। अध्यात्म की साधना भी एक संपदा है। तत्त्व बोध और ज्ञान भी जीवन की एक संपदा होती है। ऐसी संपदाओं को थोड़े से लाभ, भौतिक आकर्षण के कारण खोना नहीं चाहिए। यह भी एक दृष्टांत से समझाया कि वो नहीं दूँगा जो देना चाहता था।

त्याग लेकर निभाना भी एक संपदा है। आदमी बाह्य चीजों में उलझ जाता है, तो अध्यात्म की बड़ी संपदा से वंचित रह सकता है। सुंदर शिक्षा है, एक सूक्त है कि थोड़े के लिए बहुत को मत खोओ।

पूज्यप्रवर आज प्रेमसागर गार्डन में पधारें हैं। पूज्यप्रवर के स्वागत एवं अभिवादन में प्रेमसागर गार्डन से मनोज गादिया, राजेश बोहरा, महिला मंडल, एनी पटवा, अमृत भंडारी, कमल कोठारी, पंकज पटवा, अंजली मौनत, प्रमोद कोठारी, नरेंद्र कासवा, प्रतीक्षा मौनत, पुनकित रजत पालरेवा, किशोर मंडल, महक भंडारी, सोनू पटवा, रोचक मौनत ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि मनन कुमार जी ने किया।



साध्वी कमलप्रभा जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

अर्हम्

गण री घणी बढ़ाई आब साध्वी कमलप्रभा।
गण में छोड़ी अपनी छाप साध्वी कमलप्रभा।।

कुशल तान सुंदर माताजी है आंगन में जनम लियो।
बैद कुल पर ऊँचो कलश चढ़ायो कमलप्रभा।।

दस भायां री बहन लाडली अरु गुलाब री सोदरी।
चंदेरी री उजली उजली आभा कमलप्रभा।।

मेदपाट रे उदयापुर में संयमलच्छी वरण करी।
तुलसी प्रभु री कृपा सवाई पाई कमलप्रभा।।

अमल कमल सम हँसता खिलता संयम में हा रंगराता।
देख्यो तीन गणाधिप रो बरतारो कमलप्रभा।।

कर्मठ, चतुर, सहज फुर्तीला आलस रो कोई नाम नहीं।
चतराई री सागी बनागी हॉ कमलप्रभा।।

धोरों री धरती पर थे तो इंद्रधनुषी रंगभर्या।
मारवाड़ी स्यूं मेवाड़ी बगम्या कमलप्रभा।।

सहगामी सतियाँ ने हरदम सुंदर शिक्षा देवतां।
गण री रीत भाल पर चालता हॉ कमलप्रभा।।

तन स्यूं हल्का मन स्यूं हल्का कर्मा स्यूं हल्कापणो।
आखिर दिखलाई दृढ़ताई भारी कमलप्रभा।।

गुरुदर्शन री हूस घणी ले दोड्या आया मेवाड़ा।
फिर क्यूं कीन्हीं जल्दी जाणै री थे कमलप्रभा।।

मुगती रै मारग पर बढ़ती चढ़ती रहवे आतमा।
आध्यात्मिक ऊँचाई वरण करीज्यो कमलप्रभा।।

— साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

जीवन सफल बनायो जी---

● साध्वी समृद्धिप्रभा ●

जीवन सफल बनायो जी-२
महाश्रमण री आज्ञा स्यूं थे अनशन ठायो जी।।

सतरह वर्षा री उमर म्है, घर परिवार ने छोड़्यो।
५८ वर्षा संयम पाल्यो, पायो रत्न अमोलो।।

गुरुवर तुलसी कर कमला स्यूं, संयम श्री स्वीकारी।
श्री कुशल, सुंदर री लाडली ने, जीवन नैयातारी।।

दस भायां री बहन लाडली, बैद परिवार नामी।
थारै कुल रा १६ दीक्षित, घर जागी पुण्वानी।।

कमला स्यूं कमलप्रभा बटा, गाँव शहर थे विचर्या।
प्रवचन री अद्भुत शैली स्यूं, गणवन में थे चमक्या।।

सहज सरलता सहनशीलता, कार्य कुशलता न्यारी।
प्रातः बेला श्रुत सामायिक, ध्यान साधना थारी।।

शासनश्री रो अलंकरण, ग्यारवां गणकसायो।
गंगाणै रो मर्यादोत्सव, सब ने घणो सुहायो।।

तीव्र वेदनां में भी रहतो, हँसतो खिलतो चेहरो।
डॉक्टर सारा अचंभित रहग्या, देख मनोबल थारो।।

घणी उमंग ले जोधाणै स्यूं, वस्त्र-नगर में आया।
भावी आगे जोर न चाल्यो, गुरु दर्शन नहीं पाया।।

भीलवाड़े रा श्रावक सेवा, ध्यान घणो रखायो।
शासनश्री रे श्रम बूँदा स्यूं, गुरु चौमासो पायो।।

तीन-तीन गुरुवारी किरपा, सौभाग्यो थे पाई।
महाश्रमणीजी री स्नेहिल निजरं, रहती ज्यूं परछाईं।।

अर्हम्

● शासनश्री मुनि मणिलाल ●

कमलप्रभा कमल ज्यूं, खिली रही दिन रेन।
हंसणि जीवन जीतियो, मधुरी-मधुरी वेन।।

'सागर मुनि' भगिनि सुघड़ राख्यो विनय-विवेक।
निर्मल-कमल-नरपत की राखी साची टेक।।

बैद सुखी परिवार में, धन-दौलत को छोड़।
संयम पथ में बढ़ रही, माया स्यूं मुँह मोड़।।

मणि-मुनि स्यूं भी राखनी, माँ-बहन सो प्यार।
आज अचानक कै करयो, छोड़ चली मझधार।।

गुरु दर्शन की ले गई, मन की मन में जाण।
स्वर्गा स्यूं दर्शन करो, हो जीवन कल्याण।।

संयम स्यूं आग बढ़ो, लो मुक्ति सोपान।
मुनि-मणि भाव भावना, शुद्ध स्वरूप सुजान।।

सिरीयारी में तीन दिन, रहया सुखद संतोष।
गुरु आज्ञा पर राखता, अपना जीवन झोस।।

मंगलकामना

● कमल बैद ●

कहाँ गई हो प्यारी बहना क्यो भूलो छोटे भाई को
मन किलना है भारी भारी कैसे पाटू इस खाई को
क्यो भूल गई बचपन की यादें हरपल तुम्हें सताई जो
दीक्षा लेने तैयार हुई करता था खूब बड़ाई जो।

कुशल सुंदर कुल की लाडली वो बहनें व दस हैं भाई
दीक्षा लेकर जन्म सुधारो बहना कुल की रीति सवाई
उदयापुर तेरी दीक्षा में विदाई गीतिका भाई जो
गुरु तुलसी ने याद किया दीक्षा में पुनः सुनाई जो।

मानव जीवन बस माया है जाना पर्वत राई को
तुलसी कर से दीक्षा लेकर चली साथ परछाई जो
महाप्रज्ञ की छत्र छँव में पहचानी सच्चाई जो
महाश्रमण की दृष्टि अद्भुत अनुपम करुणा पाई जो
पूर्ण करी सयम की षष्ठी स्वीकार करो बधाई को
कोतवाल चम्पक मुनि भगिनि इंद्रु जी की नपदल बाई
रजत रेखा जी की भुवासा चढ़ी शिखर छूली ऊँचाई
पंद्रह थे न्यातिले गण में सती सोलहवीं कमला बाई
अंतिम अनशन कलश चढायो वाह-वाह कितनी ख्याति पाई।

संघ में तुमने कार्य किया कोन करे भर पाई को
संग तुम्हारे सदा रहेगी बहना पुण्य कमाई जो
बढ़ती रहना प्रगति पथ पर तुमने ज्योति जलाई जो
शासनश्री कमल प्रभा कैसे भूलें भलाई को
अंतिम दर्शन नहीं कर पाया माफ करो इस भाई को।

विश्व पर्यावरण दिवस

गुवाहाटी।

विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य पर अणुव्रत समिति द्वारा इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, गोपीनाथ नगर में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत निवर्तमान अध्यक्ष व अणुविभा कार्यकारिणी सदस्य छतर सिंह चोरड़िया द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुई। स्वागत वक्तव्य अध्यक्ष बजरंगलाल डोसी ने दिया। इंस्टीट्यूट के डी० बर्मन का फुलाम गमछा द्वारा सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक उपाध्यक्ष नवरतन गधेया एवं मनोज सेठिया थे। कार्यक्रम के अंतर्गत करीब २० पेड़ लगाए गए। इस अवसर पर नन्हे-मुन्ने बच्चों के साथ वरिष्ठ उपाध्यक्ष बजरंग बैद, मंत्री पवन जम्मड़, सहमंत्री अशोक बोरड़ व जयकुमार भंसाली, कोषाध्यक्ष संजय चोरड़िया, कार्यकारिणी सदस्य ताराचंद ठोलिया, प्रकाश गोलछा व सदस्य संदीप बैद उपस्थित थे।

वैक्सीनेशन कैंप का आयोजन

साउथ हावड़ा।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में साउथ हावड़ा तेरापंथ भवन में प्रथम वैक्सीनेशन कैंप का आयोजन हुआ। जिसमें ४३१ व्यक्तियों को कोविशील्ड वैक्सीन की प्रथम डोज दी गई। इसमें सकल जैन समाज के अलावा अन्य वर्ग के व्यक्तियों ने भी भाग लिया। इस कैंप का आयोजन विनायक हेल्थ वर्ल्ड के सहयोग से किया गया। कैंप का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से सामूहिक मंगलाचरण के साथ हुआ। इस अवसर पर सभा के चीफ ट्रस्टी संजय नाहटा, ट्रस्टी बाबूलाल दुगड़, अशोक कोठारी, सभा अध्यक्ष सुशील कुमार गोंडिया आदि अनेक पदाधिकारीगण, सदस्य एवं कार्यकर्ताओं ने अपने अमूल्य समय एवं श्रम का योगदान दिया।

◆ संसार में परिवार, पैसा और हर प्रकार की सुविधा मिल सकती है, किंतु जिसे संयमरत प्राप्त हो गया, उसे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण चीज मिल जाती है।

— आचार्यश्री महाश्रमण

★ जीवन का सार है सच्चाई। दुनिया में यथार्थ भाव आज भी जीवित है। कुछ लोग ऐसे मिलेंगे जो यथार्थ की आराधना करने का प्रयास करते हैं।

—आचार्य श्री महाश्रमण

7



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स

21 जून - 4 जुलाई, 2021

सिकंदराबाद

आचार्यश्री महाश्रमण जी का पट्टोत्सव कार्यक्रम साध्वी निर्वाणश्री जी एवं शासनश्री जिनरेखा जी के संयुक्त सान्निध्य में हुआ। शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि आज का दिन हमारे धर्मसंघ का विशिष्ट दिन है। आचार्यश्री महाश्रमण जी अध्यात्म के शिक्षर पुरुष हैं। वे संसार रूपी दावानल को बुझाने के लिए तीर्थंकर महावीर की भांति जिन तुल्य हैं।

साध्वी निर्वाणश्री जी ने आराध्य के प्रति आस्था का अर्थ समर्पित करते हुए कहा कि आज का दिन जिनशासन में विशेष है। आज ही के दिन भगवान महावीर ने निरावरण केवलज्ञान प्राप्त किया।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी का इन्द्रिय-संयम अनुत्तर है। आपकी समता व धृतिबल भी अनुत्तर है। आपका पावन पदारोहण भगवान महावीर के कैवल्य कल्याणक के दिन हुआ।

साध्वी मधुरयशसा जी एवं साध्वी लावण्यप्रभा जी ने वक्तव्य के माध्यम से आराध्य देव की अभ्यर्थना की। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण से आर्षवाणी में हुआ। नमस्कार महामंत्र के संगान के पश्चात् साध्वी श्वेतप्रभा जी, साध्वी धवलप्रभा जी व साध्वी कुंदनयशसा जी ने आम वार्णी में आचार्य अभिर्वंदना की।

तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद के मंत्री सुशील संचेती ने हृदय के भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वीवृंद ने समवेत स्वर में गीत की भावपूर्ण प्रस्तुति दी। मंच संचालन साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने किया। कार्यक्रम की सफलता में अग्रिहत गुजरानी व खुशाल भंसाली ने अपनी भूमिका निभाई। डॉ०वी० कॉलोनी, तेरापंथ भवन से इस कार्यक्रम का प्रसारण तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद का आयोजन में हुआ।

ईरोड

मुनि अर्हत कुमार जी आदि के सान्निध्य में आचार्य महाश्रमण जन्मोत्सव, पट्टोत्सव, दीक्षा दिवस का आयोजन स्थानीय स्तर पर हुआ। मुनि अर्हत कुमार जी ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कहा कि जब-जब कोई महापुरुष का इस धरा पर अवतरण होता है, कुछ नया करने के लिए होता है। महापुरुष आदमी जन्म से नहीं काम-पुरुषार्थ से बनता है।

आपका दायित्व बोध बढ़ा तेज है। संकल्प-बल तेज है। कष्ट-सहिष्णुता है। आप धुन के धनी हैं। ऐसे महापुरुष-युगनायक सौभाग्य से मिलते हैं। आपमें ऋजुता है, मुद्रुता है। आपश्री के किन-किन गुणों का व्याख्यान करें। ऐसे महान गुह में मिलें।

इस अवसर पर हम भी संकल्प लें कि हमारे से संघ की लघुता लगे ऐसा काम न हो जाए। गुरुवृष्टि ही हमारी सृष्टि है। ऐसे महान गुरु की छत्र-छाया में निरंतर

आचार्यश्री महाश्रमण जी के जन्मोत्सव, दीक्षा दिवस एवं पदाभिषेक के विविध कार्यक्रम अध्यात्म के शिक्षर पुरुष हैं आचार्यश्री महाश्रमण

आगे बढ़ते हुए हम लक्षित मंजिल प्राप्त करें।

मुनि भरत कुमार जी ने बताया कि आचार्यश्री महाश्रमण जी तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम आचार्य हैं, जिनका जन्मोत्सव, पट्टोत्सव एवं दीक्षा दिवस वैशाख महीने के शुक्ल पक्ष में आते हैं और ये तीनों अवसर भी सरदारशहर की धरा को ही मिले हैं। मुनि जयदीप कुमार जी ने गीत का सुमधुर संगान किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में कन्या मंडल ने महाश्रमण अष्टकम का संगान किया। उपासक हनुमानमल दुग्ड़, उपासक प्रकाशचंद्र पारख, उपासक रमेश कुमार पटवारी ने पूज्यप्रवर की अभिर्वंदना में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। वीणा भूतोड़िया ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन अमित बेद ने किया।

जयपुर

आचार्यश्री महाश्रमण जी का ४८वें दीक्षा दिवस हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अभातेयुप के निर्देशन में युवा दिवस के रूप में मनाया गया। तेयुप के आह्वान पर ४८ संकल्पों में से हजारों संकल्प स्वीकार कर तेयुप, जयपुर के शाखा प्रभारी अभिनंदन नाहटा (अभातेयुप), तेयुप, जयपुर के पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्य, किशोर मंडल व सदस्यों सहित सैकड़ों की संख्या में श्रावक समाज ने पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में संकल्पों के द्वारा श्रद्धा भक्ति चिरायु की। कार्यक्रम की संयोजना में संयोजक गौतम बरड़िया का श्रम उल्लेखनीय रहा।

उधना

अभातेयुप के तत्वाधान में तेयुप द्वारा युवा दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अभातेयुप द्वारा निर्देशित संकल्पों का कल्पवृक्ष के रूप में त्याग और संकल्प निर्दिष्ट किए गए, जिसके अंतर्गत तेयुप, उधना द्वारा आचार्यप्रवर का जन्मोत्सव हर्षोल्लास एवं आध्यात्मिकता पूर्वक मनाया गया। परिषद अध्यक्ष अरुण चंडालिया ने बताया कि युवा शक्ति ने इस अवसर पर सैकड़ों त्याग और संकल्प के प्रत्याख्यान किए। युवा दिवस के उपलक्ष्य में त्याग और संकल्प के आह्वान के साथ ही संपूर्ण धर्मसंघ में अपने आराध्य को त्यागमय भेंट देने की होड़ लग गई, जिसमें एक त्याग से लेकर ४८ त्याग तक के संकल्प लिए गए। परिषद के सदस्यों एवं संपूर्ण समाज ने १५० से अधिक संकल्प किए।

आचार्यश्री के इंगितानुसार चलने वाली युवा शक्ति संपूर्ण देश भर में धार्मिक एवं

सामाजिक क्षेत्र में कार्य कर रही है। अभातेयुप के सदस्य कोरोना की विषम परिस्थिति में देशभर में अब तक ४०,००० से अधिक यूनिट रक्त एवं २,००० से अधिक यूनिट प्लाज्मा जरूरतमंदों को दान कर चुके हैं। रक्तदान के क्षेत्र में अभातेयुप के नाम सर्वाधिक रक्तदान के लिए गिनायत बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड सहित अनेकों कीर्तमान दर्ज हैं।

इसके अतिरिक्त संपूर्ण भारत वर्ष में ६० आचार्य तुलसी डायनोस्टिक सेंटर के माध्यम से उचित मूल्य पर अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। आपदा के समय तत्काल सहायता पहुंचाने के लिए तेरापंथ टास्क फोर्स सदैव तैयार रहती है, वहीं नेत्रदान की टीम किसी के निधन होने पर त्वरित नेत्रदान करवाकर लोगों के जीवन में रोशनी भरने का काम कर रही है। जैसे अनेक उपक्रमों के माध्यम से समाज, राष्ट्र के विकास में अपना अभूतपूर्व योगदान कर रही है।

पूर्वांचल-कोलकाता

आचार्यश्री महाश्रमण जी के ४८वें दीक्षा दिवस (युवा दिवस) के अवसर पर अभातेयुप की प्रेरणा से तेयुप ने आचार्यप्रवर को एक आध्यात्मिक भेंट प्रस्तुत करने का प्रण किया। ४८ वर्ष ४८ संकल्प। संकल्पों की आध्यात्मिक भेंट में परिषद सदस्यों, सभा एवं महिला मंडल सहित सकल श्रावक समाज ने उत्सुकता से अपना योगदान दिया। २०० से अधिक श्रावकों ने ३००० से अधिक संकल्प धारण कर गुरुवर को अनुपम भेंट प्रदान की। सभी श्रावकगण को साधुवाद। संकल्पों के संकलन में परिषद अध्यक्ष आलोक बरमेचा व संगठन मंत्री विकास सिंधी का अथक परिश्रम रहा।

साउथ कोलकाता

आचार्यश्री महाश्रमण जी का ४८वें दीक्षा दिवस युवा दिवस के रूप में मनाया गया। अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा समग्र साउथ कोलकाता परिवार के माध्यम से पूज्यप्रवर के ४८वें दीक्षा दिवस पर सभी ४८ संकल्पों को परिपूर्ण करते हुए कम-से-कम एक संकल्प स्वीकार कर पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अपने संकल्प रूपी पुष्प अर्पित कर अपने मन के भाव समर्पित किए।

साउथ कोलकाता परिवार से कुल ६४ श्रावक-श्राविकाओं ने ७३३ संकल्प लिए। इस क्रम में जुड़ने हेतु परिषद सकल साउथ कोलकाता परिवार का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक प्रवीण सिर्रोहिया, आदित्य पारख एवं मोहित दुग्ड़ थे। इन संकल्पों के कल्पवृक्ष में कल्याण

मित्र बिशन दयाल गोयल परिवार की तरफ से कैलाशचंद्र गोयल ने सबसे पहले अपनी सहायिता दर्ज करवाकर परिषद में एक अनुष्ठा उदाहरण प्रस्तुत किया। तेयुप, साउथ कोलकाता गोयल परिवार द्वारा किए गए कार्य के लिए साधुवाद।

टी-दासरहल्ली

आचार्यश्री महाश्रमण जी का ४८वें दीक्षा दिवस युवा दिवस के रूप में आध्यात्मिक उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर अभातेयुप द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी को आध्यात्मिक संकल्पों की भेंट अर्पित करने की सुंदर कल्पना 'संकल्पों का कल्पवृक्ष' नाम से समग्र परिषदों के समक्ष रखी गई।

तेरापंथ परिवार संगठन सार-संभाल मैसूर

तेरापंथ महासभा के निर्देशन में तेरापंथ समाज, मैसूर द्वारा संचालित कोविड-१९ सहायता केंद्र की शुरुआत एक महीने पहले की गई। इस एक महीने में तेरापंथ समाज द्वारा मैसूर व मैसूर के आसपास के क्षेत्र में करीब ४०० तेरापंथी परिवारों की टेलीफोन के माध्यम से सार-संभाल की गई।

तेरापंथ समाज द्वारा कोविड-१९ जांच के लिए आरटी-पीसीआर की सुविधा उपलब्ध कराई, जिसमें करीब १०० से ज्यादा जांच हुई। इनमें तेरापंथी परिवार के साथ सभी जैन परिवार और साथ ही साथ स्थानीय जनता ने भी इस व्यवस्था का लाभ लिया।

जो जैन परिवार संक्रमित हुए या जिनको जो जरूरत हुई उनको डॉक्टर की व्यवस्था प्रतिदिन समय ६ से ८ बजे की बीच फोन के द्वारा उपलब्धता की जा रही है। जो व्यक्ति संक्रमित हुए हैं या परिवार और जो भी संक्रमित हैं या इस कारण जिनके परिवार में खाना बनाने के परेशानी है, ऐसे संक्रमित सदस्यों के लिए निःशुल्क और स्थानीय परिवारों में भी शुद्ध और सात्विक भोजन की व्यवस्था की जा रही है।

अभी तक करीब ६५० थाली से ज्यादा भोजन तीनों समय पहुंचाया गया। इतनी सुंदर व्यवस्था से प्रेरित होकर मैसूर सिटी कॉर्पोरेशन ने अपनी वेबसाइट और कर्नाटक की वेबसाइट पर जानकारी उपलब्ध कराई।

तेरापंथ समाज द्वारा स्वास्थ्य के क्षेत्र में बेहद कम रुपयों में ज्यादा की जांच की सुविधा उपलब्ध कराई, जिसमें अभी तक ३५ मरीजों ने इसका लाभ लिया।

तेरापंथ समाज ने शहर के विभिन्न अस्पतालों में अभी तक जैन परिवार के ३६ संक्रमित व्यक्तियों को बिस्तर उपलब्ध कराए गए। तेरापंथ समाज, मैसूर ने अभी तक २१० रक्त यूनिट और ७४ प्लाज्मा उपलब्ध कराया, जिससे सब जगह सराहना मिल रही है। तेरापंथ समाज द्वारा कम मूल्य पर दवाई उपलब्ध की जा रही है और वो भी उनके घर तक।

साध्वी जयप्रभा जी की स्मृति सभा

हैदराबाद

साध्वी काव्यलता जी ने कहा कि भिक्षु शासन नंदन वन है। इस संघ में आने वाले साधु-साध्वियाँ अपने भाग्य की सराहना करते हुए अपनी साधना में मस्त रहते हैं। शासनश्री साध्वी जयप्रभा जी हमारे धर्मसंघ की संघनिष्ठ, गुरुनिष्ठ, आचारनिष्ठ साध्वी थीं। आपने परम पूज्य आचार्य तुलसी के करकमलों से दीक्षा स्वीकार कर धर्मसंघ की अच्छी सेवा की।

स्व० साध्वी विजयश्री जी महासतिया जी के सान्निध्य में रहकर ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य, तप की साधना का आगे बढ़ाया। लंबी-लंबी यात्राएँ करके आपने धर्म शासन की अच्छी प्रभावना की।

बचपन में हमें भी साध्वीश्री जी द्वारा संघनिष्ठा के संस्कार समग्र-समय पर मिलते थे। आपने अच्छा जीवन जीया। अंतिम समय में संथारा कर अपने जीवन को धन्य बना दिया। हम यही मंगलकामना करते हैं कि उनकी आत्मा शीघ्र मोक्ष गति को प्राप्त हो।

साध्वी ज्योतिषशा जी, साध्वी सुरभिप्रभा जी ने भी साध्वीश्री के गुणों का स्मरण किया। नौरतमल आदि ने श्रद्धा-सुमन समर्पित किए।

इसी कड़ी में तेयुप के अध्यक्ष मुकेश चावल ने बताया कि परिषद के आह्वान पर स्थानीय श्रावक समाज ने बड़ी श्रद्धा के साथ अपने आराध्य के श्रीचरणों में आध्यात्मिक संकल्प उपहृत किए। अपने गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पित श्रावक समाज से कुल १०८ सदस्यों ने कुल ७०२ एक दिवसीय संकल्प एवं कुछ सदस्यों ने एक वर्ष के लिए संकल्प ग्रहण कर अपनी श्रद्धा भावना अभिव्यक्त की।

अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष सदीप कोठारी एवं उनके नेतृत्व द्वारा इन 'संकल्पों का कल्पवृक्ष' अभियान प्रस्तुत करने के लिए हार्दिक आभार एवं परिषद सहमंत्री अशोक बोहरा ने संयोजक का दायित्व संपादित किया।

अभातेयुप सदस्य एवं निवर्तमान अध्यक्ष राकेश दक के श्रम का सहयोग रहा एवं संपूर्ण दासरहल्ली श्रावक समाज का सहयोग प्राप्त हुआ।



शासनश्री साध्वी जयप्रभा जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

अर्हम्

● शासनश्री साध्वी विद्यावती 'द्वितीय' ●

साध्वी जयप्रभा जी ने जीवन को शिखर चढ़ाया।
संयम जीवन में अनशन कर पौरुष प्रबल दिखाया।
पल-पल गुरु का साया है।
सिर पर छतर छाया है।।
श्रीद्वारगढ़ चोरड़िया परिकर में जन्म तुम्हारा।
तुलसी गणनायक से तुमने संयम पथ स्वीकारा।
दूर प्रदेशों में यात्रा कर नैतिक दीप जलाया।। साध्वी---।।
कला कुशलता मिलनसारिता ऋजुता है जीवन में।
सेवाभावी स्वाध्यायी तुम रहती संयम धुन में।
गुरुवर की ऊर्जा पा तुमने कठिन मार्ग अपनाया।।
सही वेदना अतुलित तुमने समता भाव निराला।
संधारा कर दिल्ली गिरिगढ़ गण का नाम उजला।
बड़ भगिनी ने अंत समय में, अनशन है पचखाया।।
धन्य-धन्य शासनश्री जयप्रभा जी तुम बड़भागी।
सफल मनोरथ हुआ तुम्हारा आत्मिक शक्ति जागी।
सिद्ध बुद्ध उन्मुक्त बनो वन जाए कंचन काया।।

लय : मायन-मायन---

अर्हम्

● साध्वी चंदनबाला ●

जीवन धन्य हुयो-३
धार्यो अनशन गुरु आणां स्यूं।
चढ़ता बढ़ता परिणाणां स्यूं।
एगोड्टं धार्यो प्राणां स्यूं।।१।।
तोड़ी तन री ममला सारी।
आत्मा स्यूं जोड़ी एकतारी।
हिम्मत दिखलाई थे भारी।।२।।
विजयश्री जी संकेत दिरायो।
या सपने में कोई आयो।
काई कारण अनशन टायो।।३।।
दृढ़ता समता बढ़ती जावै।
भावश्रेणी निर्मलता पावै।
दिन-दिन मुक्ति नेड़ी आवै।।४।।
बडभगणी रो संबल पायो।
जीवन उपवन ने सरसायो।
सगला जय-जय घोष सुणायो।।५।।
दिल्ली रा श्रावक सौभागी।
श्रद्धायुत सारा अनुरागी।
वांकी भी किस्मत है। जागी।।६।।
गुरुवर आपां रा उपकारी।
धर्मसंघ है मंगलकारी।
करल्यो सेवा से सुखकारी।।७।।

लय : धरती धोरां री---

अर्हम्

● साध्वी योगक्षेम प्रभा ●

अनशन है जयकारी।
शासनश्री जयप्रभाजी की हम जाएँ बलि-बलिहारी---।।
विपुल वेदना तन में फिर यह कैसे हिम्मतधारी।
नेह देह का तजकर जोड़ी आत्मा से इक्तारी।
समता देख अनूठी सतिवर! विस्मित है नरनारी---अनशन---।।
चिन्मय से जब प्रीत जगे तब होता है संधारा।
मृगमय से जब मोह छूटे तब बदले चिंतनधारा।
भावों की श्रेणी आरोहण है सुकृत संचारी---अनशन---।।
सुखपृच्छ सह करे वंदना, अविनय आप खमाए।
पद निर्वाण प्राप्त हो जल्दी यही भावना भाए।
मिला भाग्य से भैक्षव शासन, जिन शासन सुखकारी---अनशन---।।
क्षणभंगुर इस तन से आखिर, पूरा सार निकाला।
रहाज मिला सुंदर सतियों का, मूल्यु को ललकारा।
विजय वरो इस कर्म समर में मंजिल पा मनहारी---अनशन---।।

लय : संयमयम जीवन हो---

अर्हम्

● साध्वी संघप्रभा ●

सति जयप्रभा जी जयकारी।
जावां हिम्मत पर बलिहारी।
पचख्यो अनशन दृढ़ता धारी।।
द्वारगढ़ चोरड़िया कुल में।
जनम्या शुभ वेल्यां शुभ पुल में।
बचपन स्यूं ही शुभ संस्कारी।।
युवा-वय में संयम धार्यो।
तुलसी चरणां जीवन वार्यो।
सति विजय सन्निधि मनहारी।।
अंतर मन स्यूं सेवा साझी।
स्मृतियों सब आज हुवै ताजी।
थे मिलनसार मुदु व्यवहारी।।
बरसां विचर्या बण अग्रगण्य।
महाप्रज्ञ महर पा बण्या धन्य।
महाश्रमण कराई रिझवारी।।
शासनश्री संबोधन पायो।
तप जप स्यूं जीवन चमकायो।
गणि-गण स्यूं राखी इक्तारी।।
समता स्यूं वेदन खूब सही।
मुख स्यूं जावै के वात कही।
सतियों सहवर्ती सुखकारी।।
दिल्ली भारत री रजधानी।
भावी री चलगत पहचाणी।
कर ली परभव री तैयारी।।
भावां री श्रेणी अब चढ़ती।
खिण-खिण उज्ज्वलता हो बढ़ती।
मजबूती स्यूं जीतो पारी।
आ सुखद कामना है म्हारी।।
मौके पर थे आड़ा आता।
सति कानकंवर यूं फरमाता।
है संघप्रभा भी आभारी।
बरसाई वत्सलता भारी।।

लय : ॐ शांति जिनेश्वर

अर्हम्

● साध्वी कांताश्री ●

जय बोलो जय प्रभा सतीवर की।
संयम से जगमग ज्योति की।
कितना उज्ज्वल निर्मल जीवन।
तप-त्याग को माना उत्तम धन।
इस बड़े कीमती मोती की।।
चोरड़िया कुल में जन्म लिया।
छोटी वय में घर त्याग दिया।
जागी भक्ति गुरु चरणों की।।
तुम सहज सौम्यता सूरत हो।
तुम सहिष्णुता की मूरत हो।
सत्संस्कारों के सौरभ की।।
वेहरे पर तेज निराला है, अनशन का अमृत प्याला है।
इस तप, भूत महाशक्ति की।
भैक्षव शासन मंगलकारी।
गुरु महाश्रमण है सुखकारी।
जय बोलो इस नंदनवन की।।

लय : ॐ शांति---

अर्हम्

● साध्वी उज्ज्वलप्रभा ●

जय-जय जयप्रभा, श्रमणी धृतिधारी।
वीरवृत्ति स्यूं अनशन धार्यो, जीवन जयकारी।
है विलक्षण हिम्मत थारी, कमर कसकर कर ली तैयारी।
संयम जीवन रो गौरव गावै दुनिया सारी।।
गुरु तुलसी स्यूं संयम पायो।
चंद्रकला ज्यूं जीवन विकसायो।
गुरु करुणा स्यूं खिलणी, संयम फुलवारी।।
गण दरिचै रो, उजलो मोती।
आब निराली, संयम ज्योति।
साध्वी श्रेय ध्येय, गुरुदृष्टि इक्तारी।।
है आदर्शमय, जीवन थारो।
समता दमता रो, संगम न्यारो।
शासनश्री दिखलायो, दृश्य ओ विस्मयकारी।।
संयम पज्जवा, निर्मल निर्मल।
भावां री श्रेणी, उज्ज्वल उज्ज्वल।
चढ़ता भावां स्यूं विजय वरो मंगलकारी।।
धन्य-धन्य सतिवर, अनशन धार्यो।
लियो भार थे पार उतार्यो।
पूर्ण हुयां मनोरथ थारां नैया तारी।।
नंदनवन सो शासन पायो।
महाश्रमण गुरुवर रो सायो।
जीवन नैया खेवणहार गुरु उपकारी।।

लय : स्वामी भीखणजी---

शासनश्री साध्वी जयप्रभा जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

अर्हम्

● साध्वी उज्ज्वलरेखा ●

नंदनवन ओ शासन, सुरतरु नेमा नंदन।
शासनश्री साध्वी जयप्रभाजी, चढया अनशन स्यन्दन।।आ।।

नश्वर तन री ममता, मोह माया सब त्यागी।
अवसर री किम्मत ने, समझे है बड़भागी।
चमचम चमकै चेहरो, काया बगणी कुंदन।।

आत्मा री असली विभुता, पायौ रो अवसर है।
अन्तरतम री खिडक्याँ, खुलज्यावे सुखकर है।
आई घड़ियाँ पावन, थारो पुलकित कण-कण।।

माटी री काया रो, थे मोल चुकायो है।
इच्छा मृत्यु रो ओ, संकल्प सझायो है।
राजधानी में आयो, अवसर ओ मनभावन।।

भावां रा सौदागर बग, बाजी थे जीत रहा।
श्रेणी आरोहण कर, मुक्ति रे निकट बहा।
उज्ज्वल उज्ज्वल भावां स्यूं, चरणों में शत वंदन।।

लय : मेरा गीत अमर कर दो---

अर्हम्

● साध्वी अनुपेक्षाश्री ●

अद्भुत समता धारी, साधना रो सार है।
वंदन सतीवर थानै, बारंबार है।।

तीसरो मनोरथ धार्यो, कर्यो काम भारी।
सतीवर री देख दृढ़ता सारा विस्मयकारी।
गहरा गंभीरा सतीवर गुणारा भंडार है।।
वंदन सतीवर थानै---

उपकारी सतीवर थे तो, मैंने खूब पढायो।
योगक्षेम वर्ष में तो, समय लगायो।
आभारी मनस्यूं म्है तो कृपा अनपार है।।
वंदन सतीवर थानै----

शासनश्री बड़भागिनी रो, सुखद संयोग है।
सुव्रता जी, शशिरिखा जी रो विरल योग है।
सारा ही सतिवर देखो, सेवा में तैयार है।।
वंदन सतीवर थानै----

भैक्षव शासन री, करी खूब प्रभावना।
अंतर्मनस्यूं सतीवर म्हारा खमतखामणा।
महाश्रमणशासनदीपे, जय-जयकार है।।
वंदन सतीवर थानै----

लय : अब तो पधारो भगवान---

अर्हम्

● साध्वी पुण्ययशा ●

तप की जय-जयकार-३
सति जयप्रभाजी तपसण, मेटो जन्म मरण की उलझन।
जीवन बन जाए कुंदन।।

शासनश्री ने शासनश्री का, अद्भुत जोश जगाया है।
भगिनी से अनशन स्वीकारा, अवसर का लाभ उठाया है।
खड़े मौत के सम्मुख निर्भय वंदन बारंबार।।

नश्वर तन में खिलती सुंदर, तप की केशर क्यारी है।
अपनाई तुमने वीरवृत्ति, जाये हम बलिहारी है।
महानिर्जरा का यह पथ है, करता भव से पार।।

साहसी कदमों से तुमने, मृत्यु को ललकारा है।
मन में मजबूती पूरी, गुरु का सबल सहारा है।
धन्य-धन्य है जयप्रभाजी, करते निज उद्धार।।

तुलसी शताब्दी वर्ष सुहाना, सेवा का लाभ कमाया।
गणप्रभाजी का संथारा, साज दे मन हर्षाया।
अनहद गुरु कृपा पाई, तप से जीवन गुलजार।।

भागी सौभागिनी हम सारे, भैक्षव शासन पाया।
महातपस्वी महाश्रमण का, सिर पर पावन साया।
भगिनी मंडल सहयोगी, सतिया सब सुखकार।।

लय : जाग अरे ईसान---

अर्हम्

● साध्वी प्रमिला कुमारी जादि साध्वियाँ ●

समता राखीज्यो सतिवर! वेगी मुगति मिलसी।
दृढ़ता राखीज्यो, भावां स्यूं सब संकट टलसी।।आ।।

भूख प्यास री वेदना थे, सही अनन्ती बार।
जीवन में ओ अवसर आयो, उतरो भव स्यूं पार।।

नश्वर तन री ममता छोड़ी अजर अमर पर ध्यान।
अरिहंता रो शरणों थानै, होसी झट कल्याण।।

महायात्रा रा महापथिक थे, रहो सतत् गतिमान।
समकित नौका में थे बैट्या, करो आत्म पहचान।।

साध्वी प्रमिलाश्री देवे है, थानै साधुवाद।
आत्मा भिन्न शरीर भिन्न है, सुणज्यो अंतरनाद।।

लय : ऊँची राखीज्यो---

♦ न्यायालय की प्रतिष्ठा और गरिमा बनाए रखने के लिए अपेक्षित है कि न्यायाधीशों के मन में सच्चाई के प्रति निष्ठा बनी रहे।

— आचार्यश्री महाश्रमण

अर्हम्

● साध्वी विशदप्रज्ञा ●

राजधानी में रंग है छाया, अनशन बेला सुहानी।
शासनश्री जयप्रभा की गुंजे, साहस की कहानी।।

उपशम आभा देखी मनहर, संयम है वरदानी।
दृढ़ता, मृदुता, ऋजुता, सहिष्णुता की एक निशानी।
गण का सुयश बढ़ाया भारी, मुख-२ आज जुवानी।।

साँसों की सरगम गाएँ, धम्मं शरणं पवज्जामि।
रजपूती पर है बलिहारी, आत्म-यौद्धा वंदामि।
आराधक पद मंगलमय हो, शांति की सहनाणी।।

करोड़ भवों के कर्म खपाए, अनशन अलख जगाई।
माटी का है मोल चुकाया, संयम-सरिता महकाई।
गुणस्थानों का आरोहण हो, जय हो शिव-सेनानी।।

रत्न-जय भगिनी निराली, सतियाँ हैं सुखकारी।
शिव-पथ का तुम द्वार खोलो, गण-पतवार जयकारी।
विशद भावों से करे कामना, सफल हो तेरी कहानी।।

लय : जन्म-जन्म का---

अर्हम्

● साध्वी शशिकला, साध्वी उज्ज्वलयशा साध्वी चिन्मययशा ●

मन में दृढ़ता पक्की धार, अंतिम पचख्यो है संथार।
भैक्षव शासन पे थे कलश चढ़ायो म्हारा सतिवर।
याद घणो आवोला, भूला ही किया जावोला।।ध्रुव।।

जीव चौरासी लाख खमाना, भावास्यूं निर्मल बन जाना।
आत्म आराधक रो सांचा पथ पाना म्हारा सतिवर।।१।।

सुरां वीरां रो ओ पंथ, ई पर चाल्या साचा संत।
साची काया पे कुलाड़ी, वाहिं थे तो म्हारा सतिवर।।२।।

भावा री क्षेणी हो चढ़वी, जाओ क्षण-क्षण आगे बढ़ती।
सरो आत्मा रा कारज, थे तो म्हारा सतिवर।।३।।

मन में समता धारया साची, आत्म रो कारज सर जासी।
तोड़ो कर्मा री बेड़ी ने तड़तड़, थे तो म्हारा सतिवर।।४।।

शशिकला सम साधना, अनशन री आराधना।
अंतिम जीवन रो ओ सार निकाल्यो, थे तो सतिवर।।५।।

लय : याद घणां आवोला---



शासनश्री साध्वी जयप्रभा जी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

अर्हम्

● शासनश्री साध्वी सोमलता ●

श्री जयप्रभाजी जय हो।
तिविहार अनशन स्वीकार्यो नूतन सूर्य उदय हो॥ध्रुव०॥

डूंगरगढ़ रो चोरड़िया कुल गण में नाम कमायो।
चार पुत्रियां एक सुपौत्री संयम पथ अपनायो।
विजयश्री जी के चरणों में जय रो भाग्योदय हो॥

रतनश्री जयप्रभा बण्या दोनूं भगिनी अगवानी।
जटे पधारया बटे बढ़ाई शासन री पुनवानी।
कलाकुशल व्यवहारकुशल बण कर्यो सुयश संचय हो॥

थोड़ा दिवस हिसार शहर में साथ रहया जद जाण्यो।
हैं आचार विचार निर्मला शांत स्वभाव पिछाण्यो।
स्वस्थ शरीर काम री स्फूर्ति मधुरो जीवन लय हो॥

रोग अचानक कर्यो अटेक नहीं कोई औषध लागी।
गहरो चिंतन मंथन कर तनड़े री ममता त्यागी।
जबरदस्त हिम्मत रो सतिवर दियो आप परिचय हो॥

शासनश्रीजी शासनश्री ने पचक्खायो संथारो।
शशि शीतल कांता रोहितजी लाभ लेवे सेवा रो।
छोटा हे मंदारयशाजी समख्यो मूल्य समय हो॥

करां कामना शासनश्री जी लक्षित मंजिल पावें।
भारत री रजधानी में अभिनव इतिहास बणावें।
सोमलता राकेश कुमारी गावे गीत उभय हो॥
श्री जयप्रभा जय हो---॥

लय : संयममय जीवन हो---

अर्हम्

● साध्वी संयमप्रभा ●

संधारे की सुरभि फैली, पुलकित दशों दिशाएँ।
भैक्षव-गण तुम्हें बधाएँ॥
'शासनश्री' श्री जयप्रभाजी, शासन का मान बढ़ाएँ॥ध्रुव॥

गुरु तुलसी की आज्ञा से, 'गिरिगढ़' में संयम पाया।
वीतराग बन जाऊँ मैं, ऐसा संकल्प सजाया।
सहज सजगता, ध्यानमग्न, कष्टों में नहीं घबराएँ॥१॥

शासन दृढ़ता, सजग धैर्यता, निर्मलता, वत्सलता।
करुणामूर्त, पापभीरुता, अद्भुत पाई समता।
सौ-सौ नमन हमारा तुमको, मुक्ति-सदन चढ़ जाए॥२॥

आत्मा भिन्न, शरीर भिन्न है, यही मंत्र अपनाया।
कैसे दूटे भव-भव बंधन, सही राज है पाया।
लौ संयम पतवार हाथ में, भव-सागर तर जाए॥३॥

संलेखन कर खुशी-२, कुल पर कलश चढ़ाया।
बड़ी भगिनी रत्नश्रीजी, संथारा पचखाया।
मिली साध्वियों सहज सुखद, जीवन बगिया खिल जाए॥४॥

तेरापंथ सा धर्मसंघ, सौभाग्यशाली पाता।
महाश्रमण की आर्षवाणी से, चित्त निर्मल बन जाता।
'संयम' समता सुर-सरिता में, नित उठ स्नान कराए॥५॥

लय : यह भारत देश हमारा---

अर्हम्

● साध्वी लब्धिश्री ●

दीपे संथारो।
भावना सति जयप्रभा जी री आज हुई साकार॥

सौभागी गुरु तुलसी स्यू अणमोलो संयम पायो।
डूंगरगढ़ चोरड़िया कुल रो जस झंडो फहरायो।
परिकर भागी संघ में भतीजी अरु भगिनी चार॥

चढ़ता परिणामां स्यू पचख्यो हिम्मत किन्हीं भारी।
काया री ममता छोड़ी ने आत्मा स्यू इकतारी।
मंगल बेला अनशनरी देवां बधाई सौ-सौ बार॥

विजयश्री जी रे तन रो कपड़ो बणकै रखा सदा ही।
विनय, वत्सलता, मिलनसारिता पाई पग-पग वाहवाही।
गण अनुरक्ति, गुरुभक्ति, चिंतन है स्वस्थ उदार॥

असातवेदनीय उदियायो तन पर चोट करारी।
रे वे बढ़ती चढ़ती सावां री श्रेणी जयकारी।
अनशन री पावन नौका स्यू कर धो खेवो पार॥

साध्वी रतनश्रीजी, शशिरखाजी, शीतल साझ सुखकारी।
कांतप्रभा, रोहित, मंदार सब सतियां साताकारी।
भैक्षवगण में महाश्रमण महाश्रमणी कृपा अनपार॥
(ग्यारह सतियां से सुयोग रोहिणी (दिल्ली) बण्यो गुलजार॥

लय : विरमी---

अर्हम्

● साध्वी डॉ० परमयशा, साध्वी धर्मयशा ●

नये सुजन की नई प्रभाती नया सेवरा लाहां।
संधारा संलेखना से नव इतिहास रचाएं।
ॐ णमो अरहंताणं, ॐ णमो श्री सिद्धाणं॥

शासनश्री जी जयप्रभाजी जीवन धन्य बनाएं।
हार्दिक समता संयम से तप त्योंहार मनाएं।
शत-शत वंदन अभिनंदन नव जागुति पाठ पढ़ाएं।
ॐ णमो आयरियाणं, ॐ णमो उवज्जायाणं॥

जिनशासन के महायान से अजर अमर पद पाएं।
भिक्षु गण के नीलांबर में नव पदचिह्न बनाएं।
पंचाचार के वैभव से श्री संपन्न है कहलाएं।
ॐ णमो लोह सब्ब साहूणं----॥

जीवन की सुंदर पोथी में नवपद पावन बसता।
सांस-सांस में रोम-रोम में भिक्षु बाबा रहता।
तन में शासन मन में शासन साध्य शिखर चढ़ाएं।
एसो पंच णमोक्कारो---॥

देश प्रदेशों की यात्रा से नवोन्मेष सजाएं।
प्रवचनशैली अद्भुत पावन जन-जन के मनभाएं।
महावीर की जिनवाणी से श्री सुप्रभा बढ़ाएं।
सब पाव पणासणो----॥

भगिनी साध्वी ने गुरुकृपा से स्वर्णिम अवसर पाया।
शशिरखाजी आदि ने प्रज्ञा का दीप जलाया।
संस्कारों की छत्रछांह में गण गुलशन खिलाएं।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढं, हवर मंगलम्॥

लय : माइन-माइन---

अर्हम्

● साध्वी मंजुलता ●

अनशन री ज्योति जगाई रे।
सौ-सौ साधुवाद।
भव नैय्या पार लगाई रे॥

चौरड़िया कुल में जनमया।
तुलसी चरणां संयम रमग्या।
जीवन ने चमकायो रे॥१॥

बहिना रो योग मिल्यो है।
भतीजी संयोग खिल्यो है।
अनशन परिमल महकाई रे॥२॥

अद्भुत कार्य कुशलता थारी।
सेवा भावना नजर निहारी।
प्रवचन शैली मनहारी रे॥३॥

शासनश्री जयप्रभा जी
जीती जीवन री बाजी।
धे मृत्यु नै ललकारी रे॥४॥

शशी शीतल कांतप्रभा जी।
रोहित मंदार यशा जी।
सहयोग मिल्यो सुखकारी रे॥४॥

अनशन झूल में झूल्या।
तन मन री ममता भूल्या।
बाजी यश री शहनाई रे॥५॥

तेरापंथ शासन पायो।
है महाश्रमण रो सायो।
अनुमोदन गीत सुगायो रे॥६॥

बारह बरसा तक पाई।
ममता वत्सलता सवाई।
है मंजुलता आभारी रे॥७॥

लय : कैसी वह कोमल काया रे---

अर्हम्

● साध्वी संयमलता ●

अनशन री अलख जगाई, नश्वर देही थे सजाई।
दीपे है थारी अनशन साधना हो सतिवर मुक्ति पथ री आ ही आराधना॥

भाग्यशाली श्रीडूंगरगढ़ री चोरड़िया परिवार जी-२
चार-चार बहनां भतीजी शसन में संयम धार जी-२
कुल रो थे नाम दीपायो, मन रो संकल्प जगायो, हुई अनशन री पूरी भावना॥

कार्यकुशलता मधुरभाषिता और व्यवहार विनय कौशल-२
गुरुभक्ति गण अनुरक्ति आचारनिष्ठ संस्कार विमल-२
संयम में सहज सजगता, त्यागी थे तन री ममता, खूब बढ़ी है संघ प्रभावना॥

गुरु तुलसी कर कमला संयम महाश्रमण युग संथारो-२
आत्मा भिन्न शरीर भिन्न अजपाजप मंत्र बणे थारो-२
ऊँची भावा री श्रेणी, जीवन नैया ने खेणी, वरज्यो मंजिल म्हां सब री कामना॥

भगिनी द्वय आदि अनेक सतियां से शुभ संयोग मिल्यो-२
कर दृष्टि आराधन शशि शीतल कांता मंदार खिल्यो-२
अनशन में साज दिरायो, पुरो कर्तव्य निभायो, धन-२ है जागृत थारी चेतना॥

लय : प्रज्ञा के दीप जलेंगे---

★ जीवन का सार है सच्चाई। दुनिया में यथार्थ भाव आज भी जीवित है। कुछ लोग ऐसे मिलेंगे जो यथार्थ की आराधना करने का प्रयास करते हैं।

—आचार्य श्री महाश्रमण



महिला मंडल के विविध आयोजन

त्रिदिवसीय जप अनुष्ठान

अमराईवाड़ी-ओढ़वा

अभातेमम के निर्देशन में तेममं द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय जप अनुष्ठान का आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें अमराईवाड़ी श्रावक समाज के सभी भाई-बहनों ने बड़े ही उत्साह के साथ इस आध्यात्मिक अनुष्ठान में भाग लिया एवं अपने कर्मों की निर्जरा की।

आचार्यश्री महाश्रमण के जन्मदिवस पर नमस्कार महामंत्र का जाप, आचार्यश्री महाश्रमण पदाभिषेक दिवस को लोगसस का जाप और आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा दिवस को ॐ शान्ति मंत्र का जाप किया गया।

जाप का क्रम १३ घंटे तक चला। ८६ भाई-बहनों की सहभागिता रही। सभी ने पूरी जागरूकता के साथ जाप द्वारा गुरुचरणों में श्रद्धापूर्वक आध्यात्मिक भेंट चढ़ाई। पूरे अमराईवाड़ी श्रावक समाज के प्रति मंडल आभार प्रकट करती है।

अन्नपूर्णा क्रिएटिव कंपटीशन का आयोजन

अमराईवाड़ी-ओढ़वा

अभातेमम के निर्देशन में तेममं द्वारा 'मिस अन्नपूर्णा क्रिएटिव कंपटीशन' का आयोजन किया गया। जिसमें खाद्य पदार्थों का रीयूज कैसे करना है, कैसे लेफ्ट ओवर का मेकओवर करके हम अन्न को वेस्ट होने से बचा सकते हैं। इसका एक ३ मिनिट का वीडियो बनाया था।

इस प्रतियोगिता में तेममं की ११ महिलाओं ने भाग लिया और कुछ नए अंदाज में लेफ्टओवर का मेकओवर करके नई-नई डिशेंस बनाई। सभी बहनों ने रूल्स को ध्यान में रखते हुए वीडियो बनाए।

निर्णायक के रूप में डॉ० रिचो ख्याया और डॉ० अमित बाबेल रहे। निर्णय इस प्रकार रहा—प्रथम नीरू देवी सिंधवी, द्वितीय रेखा एस० चिप्यड़, तृतीय लक्ष्मी सिसोदिया रहे। कीर्ति डांगी, हिना एंड प्रियंका पगारिया, सेजल मेहता ये तीन प्रोत्साहन पुरस्कार भी निकाले गए।

सभी विजेताओं को महिला मंडल द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम स्थान प्राप्त नीरू सिंधवी का वीडियो केंद्र में भेजा गया। निर्णायक महानुभाव एवं सभी प्रतियोगी बहनों का आभार व्यक्त किया गया।

सात दिवसीय ई-क्रिएटिविटी कैंप का आयोजन

राजारजेश्वरी नगर।

तेममं राजारजेश्वरी नगर द्वारा सात दिवसीय ई-क्रिएटिविटी कैंप का आयोजन सरोज आर० बैद की अध्यक्षता में किया गया। इस कैंप में ५ से १५ साल के ७५ बच्चों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। इस कैंप की खासियत ये रही कि अधिकतर प्रशिक्षक कन्या मंडल की लड़कियाँ थीं। भावना पारख, दीक्षा कोठारी, भावना छाजेड़, वृष्टि कोठारी, प्रियंका बांटिया, आर्या संचेती, प्रेशा सुराणा, पूजा नाहटा, पूनम दुगड़ ने पूर्ण मनोयोग से सभी बच्चों को प्रशिक्षित किया। अध्यक्ष सरोज बैद द्वारा मंत्री शोभा बोथरा, कन्या मंडल प्रभारी गरिमा दुगड़ एवं अनेक अभिभावकों की उपस्थिति में सभी ७५ बच्चों एवं ६ प्रशिक्षिका बहनों को सम्मान-पत्र दिए गए।

इस कार्यशाला में संयोजिका वंदना भंसाली, सह-संयोजिका पूनम दक एवं सीमा दक ने श्रम नियोजित किया।

अन्नपूर्णा प्रोजेक्ट

अभातेमम के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में तेरापंथ कन्या मंडल ने अन्नपूर्णा प्रोजेक्ट पर कार्यक्रम रखा। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष प्रेम पारख ने सभी कन्याओं का स्वागत किया। अन्नपूर्णा गीतिका कुंजल बोथरा ने सुमधुरआवाज में गाया।

मुख्य अतिथि अभातेकिमं राष्ट्रीय सहप्रभारी नमिता सिंधी ने अन्नपूर्णा के बारे में प्रेरणा दी। उन्होंने कहा—इतना ही लो थाली में, व्यर्थ न जाए नाली में। उन्होंने बहुत से टिप्स दिए।

कन्या मंडल प्रभारी श्वेता सेठिया ने अध्यक्ष, मंत्री, मुख्य अतिथि, सेफ व कन्याओं का स्वागत किया और शादी हो या पार्टी, थाली में उतना ही खाना लें जितना खा सकें। झूटा न फेंके, समझाया। संयोजिका पायल सुराणा ने भी अन्नपूर्णा के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन आभा कोठारी ने किया तथा आभार ज्ञापन ऋतु धोखा ने किया।

तृप्ति एक बूंद कार्यशाला

चेन्नई।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में 'तृप्ति एक बूंद' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राकेश खटेड़ ने पानी की उपयोगिता पर विशेष प्रशिक्षण दिया। 'जल है तो कल है' पोस्टर लगाकर पानी की एक-एक बूंद बचाने के लिए जागरूक किया।

व्हाट्सएप-सोशल मीडिया के माध्यम से जल है तो जीवन है, जल की एक-एक बूंद को बचाने संबंधी पोस्टर लगाएँ और गुगल फॉर्म भरवाए गए। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजिका अलका खटेड़ का विशेष सहयोग रहा।

अन्नपूर्णा प्रोजेक्ट

चेन्नई।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में अन्नपूर्णा-ए क्लीन प्लेट कैंपीयन प्रोजेक्ट के अंतर्गत एलोफेंट गेट, पुलिस स्टेशन, मिंट बस स्टैंड, रेस्टोरेंट, पब्लिक प्लेस, बस स्टैंड, होटल आदि जगहों पर जाकर अन्नपूर्णा प्रोजेक्ट के पोस्टर लगाए गए और लोगों को जागरूक किया गया तथा झूटा ना छोड़ने के संकल्प करवाए एवं गुगल फॉर्म भरवाए।

व्हाट्स एप, फेसबुक और सोशल मीडिया के माध्यम से जानकारी दी, आदि अनेकों जगह जाकर अन्नपूर्णा यानी अन्न का करें आदर, उतना ही लें थाली में व्यर्थ ना जाए नाली में का प्रचार-प्रसार किया गया और ज्ञापन दिया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में हेमलता नाहर एवं लता पारख का विशेष सहयोग रहा।

आचार्य तुलसी के २५वें महाप्रयाण दिवस पर एक ही नाम है - तुलसी

● शासनश्री साध्वी सुमनश्री ●

बोलें-बोलें सुबह और शाम, एक ही नाम है तुलसी। प्रभो! शक्ति के अक्षय-धाम, एक ही नाम है तुलसी।

जब भी पुकारा इस धरती ने महामानव कोई आया। जग के सुने चौराहों पर मंगल दीप जलाया। नहीं लिया कभी आराम एक ही नाम है तुलसी।

स्वारथ की इस दुनिया में जिसका न कोई सहारा। मझधार में डोले नैय्या मिला न जिसको किनारा। उनको लिया स्नेह से थाम, एक ही नाम है तुलसी।

पावन मूरत मन में बसी है नहीं भूलेगा जमाना। मंजिल से गुमराह बने जो राहें उनको दिखाना। सिद्ध होंगे हमारे काम, एक ही नाम है तुलसी।

गुरु नाम ही त्राण शरण है बाकी सब कुछ सपना। तुलसी नाम ही सच्ची दुआ है तन्मय होकर जपना। है ज्योति पुंज प्रणाम, एक ही नाम है तुलसी।

करुणा की निर्झरणी बहाकर कितनों को सहलाया। साहस की संजीवनी देकर बढ़ते ही रहना सिखाया। थके चरणों के तुम विश्राम, एक ही नाम है तुलसी।

लय : आ लौट के आ जा मेरे मीत---

अणुव्रत समिति की विशेष संगोष्ठी

राजाजीनगर।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में अणुव्रत समिति द्वारा 'तुलसी का अणुव्रत उद्बोधन, महाप्रज्ञ का सरस प्रबोधन' पर एक विशेष संगोष्ठी का समायोजन हुआ। साध्वीवृंद द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार के पश्चात अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष देवराज रायसोनी ने मंगलाचरण एवं राजाजीनगर तेरापंथ सभाध्यक्ष शांतिलाल पितलिया ने समागत अणुव्रत समिति परिवार के स्वागत में विचार रखे।

शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि देश की आजादी के कुछ समय पश्चात ही राष्ट्रसंत आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत का प्रवर्तन किया। आचार्यश्री तुलसी ने कहा था कि भारत लोकतांत्रिक देश है। लोकतंत्र की सुरक्षा व विकास के लिए व्रत की अपेक्षा है। व्रतों से, संयम से आचरण में पवित्रता आती है। नशामुक्ति एवं परस्पर सौहार्द का भाव विकसित होता है। आप सभी कार्यकर्ता शांतिलाल पौरवाल की अध्यक्षता में अणुव्रत की आचार संहिता को और आगे बढ़ाएँ। आपने कहा कन्हैयालाल चिप्यड़ को केंद्र में कार्य करने का विशेष पदभार दिया गया, यह हमारे लिए खुशी की बात है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा 'अणुव्रत की दार्शनिक पृष्ठभूमि' ग्रंथ पर आधारित प्रतियोगिता में सभी को भाग लेने की प्रेरणा दी।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि अणुव्रत जीवनशैली है। छोटे-छोटे व्रत जीवन में संस्कारों का निर्माण करते हैं। भारतीय संस्कृति में त्यागपूर्ण विचारों का हमेशा आदर्श रहा है। जागृत जीवन की उपलब्धि है—अणुव्रत।

साध्वी मंजुरेखा जी, साध्वी उदितप्रभा जी, साध्वी निर्भयप्रभा जी और साध्वी चेलनाथी जी ने गुरुदेव तुलसी द्वारा रचित सुमधुर गीत प्रस्तुत किया।

अणुव्रत समिति के अध्यक्ष शांतिलाल पौरवाल ने कहा कि मुझे शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी, साध्वी मंजुरेखा जी आदि साध्वीवृंद से विशेष ऊर्जा मिलती है। मैं सभी साथियों के सहयोग से सारे कार्यक्रम विराट रूप में आगे बढ़ता रहूँ, यह आशीर्वाद चाहता हूँ। तेरापंथ सभा ट्रस्ट के उपाध्यक्ष माणकचंद मूथा एवं अणुव्रत विश्व भारती के संगठन मंत्री कन्हैयालाल चिप्यड़ ने अपने विचार रखे। मंत्री माणकचंद संचेती ने संचालन किया एवं संगठन मंत्री हरकचंद ओस्तवाल ने आभार ज्ञापन किया। प्रवीण, धमेन्द्र बरलोटा भी उपस्थित थे।

कोविड केअर किट का वितरण

विजयनगर।

तेरापंथी सभा द्वारा संस्था शिरोमणि महासभा द्वारा प्रदत्त कोविड केअर किट का वितरण अहम भवन के प्रांगण में हुआ। सर्वप्रथम अहम भवन में विराजित समणी संचितप्रज्ञा जी एवं समणी प्रशांतप्रज्ञा जी के मंगलपाठ का श्रमण किया गया। तत्पश्चात महासभा के सहमंत्री प्रकाश लोढ़ा ने इस अवसर पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि भारत की ६०० सभाओं द्वारा विभिन्न सभाओं के माध्यम से यह किट का वितरण किया जा रहा है। लगभग १२००० किट का वितरण हुआ। विजयनगर सभा ने भी इस कार्य को सुंदर रूप से संपादित किया। इस अवसर पर सभा के अध्यक्ष राजेश चावत ने सभी से अपील करते हुए कहा कि मानवता के कार्य में सदैव तत्पर रहें। इस अवसर पर सभा के मंत्री मंगल कोचर, सहमंत्री अशोक कोठारी, कोषाध्यक्ष संतोष मालू, बजरंग जैन उपस्थित थे।



जन सेवा हेतु २० वाटर प्यूरीफायर की स्थापना

अहमदाबाद।

अभातेमम के निर्देशानुसार तेमम द्वारा समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत तृपि एक बूँद २० वाटर प्यूरीफायर लगवाए गए। अध्यक्ष मनिता चोपड़ा के नेतृत्व में तृपि एक बूँद प्रोजेक्ट की पूर्णाहूति पर शासनश्री साध्वी रामकुमारी जी, शासनश्री साध्वी रतनश्री जी, शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने मंगल आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि कोरोना की विकट परिस्थिति में भी हमारी बहनें अखिल भारतीय के प्रत्येक कार्य जागरूकता से करती हैं, सचमुच सभी बहनें साधुवाद की पात्र हैं।

महिला मंडल अध्यक्ष मनिता चोपड़ा ने सभी प्रायोजकों के प्रति अहोभाव से आभार व्यक्त किया एवं प्यूरीफायर लगाने में सहयोग प्रदान करने वाली बहनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। हमारे लिए अत्यंत ही गौरव का क्षण था जब गुजरात महिला आयोग अध्यक्ष लीला बेन अंकोलिया ने हमारे श्रम का अंकन करते हुए समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत कोविड महामारी में भी बहनों द्वारा घर से बाहर निकलकर किए गए कार्य के लिए गौरव की अनुभूति की व

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ महिला मंडल, अहमदाबाद को प्रशस्ति पत्र प्रदान करके संस्था को सम्मानित किया। महिला आयोग ने अभातेमम द्वारा निर्मित तृपि एक बूँद के पोस्टर व वीडियो अपने फेसबुक पेज पर रखकर अभातेमम के कार्यों की सराहना की। तृपि एक बूँद प्रचार-प्रसार के लिए महापोर कार्तिक भाई परमार, डेप्यूटी गीताबेन पटेल, एएमसी भास्कर भाई भट्ट, पूर्व मेयर कान्हा भाई, कॉरपोरेटर व अमदाबाद महिला बाल विकास अध्यक्ष प्रतिभा जैन, पूर्व स्टैंडिंग चेयरमैन अध्यक्ष प्रवीण भाई पटेल व इस्पेक्टर डी०वी० पटेल ने महिला मंडल के इस ऐतिहासिक कार्य के लिए भूरि-भूरि प्रशंसा व प्रचार-प्रसार किया व शुभकामनाओं के साथ प्रशस्ति पत्र प्रदान किए।

कुल २० वाटर प्यूरीफायर-प्रीतमपुरा स्कूल-१, प्रीतमपुरा स्कूल-२, गिरधरनगर स्कूल, महिला पुलिस स्टेशन, शाहीबाग, केंद्रीय विद्यालय, साबरमती स्कूल, जहाँगीरपुरा स्कूल, पराग स्कूल, वंदना स्कूल, आचार्य तुलसी सिलाई केंद्र, गुजरात

महिला पुलिस ट्रेनिंग सेंटर, शाहीबाग-२, गुजरात महिला पुलिस हॉस्पिटल गोमतीपुरा, मातुश्री ब्रह्मा आश्रम, महाप्रज्ञ विद्या निकेतन, एम०एस०सी० वी०एड०, वस्त्रापुर प्राइमरी स्कूल, रचना स्कूल, चेरव स्कूल, चारित्रात्माओं के प्रवास स्थान पर (३ जगह), एचआईवी पॉजिटिव केयर सेंटर, दिग्विजय सेकेंडरी स्कूल, आर्मी कैंटोनमेंट जेन आदि स्थानों पर वाटर प्यूरीफायर लगाए गए।

सभी स्थानों से संस्था को प्रशस्ति पत्र प्राप्त हुए। तृपि एक बूँद के सैकड़ों-सैकड़ों संकल्प गुणल फार्म बच्चों, युवकों, कन्याओं, महिलाओं, बुजुर्गों, ऑनलाइन चल रहे स्कूलों में व महिला पुलिस ट्रेनिंग सेंटर में भरवाए गए। प्रोजेक्ट को पूरा करने में विशेष सहयोग प्रायोजक मधु गौतम बाफना, शशि देवी छोटलाल चोपड़ा, रूपी देवी धनराज गोगड़, मंजुला देवी कुंदनमल बाफना का रहा। संस्था की मंत्री प्रतीक्षा सुतरिया व सहमंत्री संगीता बाटिया ने पूरे कार्य को सुनिश्चित करने की बागडोर संभाली।

वात्सल्य केंद्र का उद्घाटन

मैसूर।

तेरापंथ समाज द्वारा वात्सल्य केंद्र का उद्घाटन तेषुप, मैसूर, सेवा भारती, रोटी मैसूर के संयुक्त तत्त्वावधान में वात्सल्य केंद्र का उद्घाटन प्रमति स्कूल कुवेपु नगर स्थित मैसूर में हुआ। इस वात्सल्य केंद्र में सुबह योगा, प्रायणाम, डॉक्टर द्वारा नियमित चेकअप, किताबें पढ़ना, धार्मिक सीरियल, खेल-कूद प्रतियोगिता, ट्रेनर्स द्वारा ट्रेनिंग कोर्स और सायं सांस्कृतिक कार्यक्रम और रात को सामुहिक भक्ति संध्या जैसे अनेक कार्यक्रम होंगे। इस वात्सल्य केंद्र में आपको घर जैसा वातावरण उपलब्ध होगा।

इस अनोखे वात्सल्य केंद्र में आप क्या कर सकते हैं अपने लिए, अपने परिवार के लिए और अपने देश के लिए, यहाँ पर सिखाया जाएगा कि आप कोरोना मरीज स्वस्थ होकर दूसरे कोरोना मरीज की किस तरह सहायता कर सकते हैं।

इस कार्यक्रम में मैसूर अर्बन ऑथोरिटी के अध्यक्ष एच० राजीव, मैसूर शहर नगर पालिका कमिश्नर शिल्पानाग, तेषुप के अध्यक्ष दिनेश दक, निवर्तमान अध्यक्ष महावीर देरासरिया, मंत्री विनोद मुणोत, संगठन मंत्री सेजल कोठारी, पूर्व अध्यक्ष मुकेश गुगलिया, आनंद मांडोत, कार्तिक गुगलिया, सेवा भारती से डॉ० चंद्रशेखर, मैसूर रोटी हरि सहित अनेक सदस्य उपस्थित रहे।

समणीवृंद का स्वागत समारोह

चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में माधवरम स्थित आचार्य महाश्रमण जैन पब्लिक स्कूल के प्रांगण में गुरु चरणों से आगत, श्रेणी आरोहण के लिए उद्यत समणी निर्देशिका शीलप्रज्ञा जी एवं समणी कातिप्रज्ञा जी का प्रशासनिक नियमों के अनुरूप स्वागत समारोह आयोजित हुआ।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि हम बड़े सौभाग्यशाली हैं कि हमें मर्यादित, अनुशासित एवं एक आचार्य की आज्ञा में चलने वाला कल्पतरु तुल्य धर्मसंघ मिला है। यशस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी की अनुशासना में तेरापंथ धर्मसंघ चहुँमुखी विकास कर रहा है। ऊर्जा के अक्षय स्रोत आचार्य महाश्रमण जी से ऊर्जा लेकर समणीजी यहाँ आए हैं। गुरुदेव की संदेशवाहिका के रूप में हम आपका स्वागत करते हैं। समणीजी ने हमारे प्रति प्रमोद भावना व्यक्त की। वो गुण हमारे भीतर और पुष्ट बनें।

साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा कि समणी शीलप्रज्ञा जी एवं समणी कातिप्रज्ञा जी समण श्रेणी की विशिष्ट, वरिष्ठ समणियों हैं। इन्होंने समण श्रेणी में अनेकों प्रभावी यात्राएँ कर धर्मसंघ की प्रभावना की है।

समणी शीलप्रज्ञा ने कहा कि आज हम साध्वी अणिमाश्री जी से नई शक्ति लेने आए हैं। आपकी साधना-आराधना विशिष्ट है। लगता है अनेक सिद्धियाँ आपके भीतर समाहित हैं। समणी कातिप्रज्ञा जी ने कहा कि साध्वीश्री जी के चरणों में आने का अलग ही आकर्षण है। आपका आभामंडल पावरफुल है।

नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ इस कार्यक्रम में तेमम ने मंगलाचरण किया। साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी सुधाप्रभाजी, साध्वी समत्वयशा जी व साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने सुमधुर स्वरलहरी के साथ स्वागत गीत प्रस्तुत किया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष विमल चिपड़, तेषुप अध्यक्ष रमेश डागा, टीपीएफ के अध्यक्ष सुरेश सकलेबा, तेमम अध्यक्ष शांति दुधोड़िया, स्कूल चेयरमैन प्यारेलाल पितलिया ने स्वागत के उद्गार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने किया।

प्रेक्षा फाउंडेशन द्वारा प्रेक्षावाहिनी में कार्यशाला का आयोजन

आंध्र-तेलंगाना।

प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशानुसार आंध्र-तेलंगाना प्रेक्षा वाहिनी में कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें लगभग ६० साधकों ने भाग लिया। मुख्य वक्तव्य में महामारी के दौरान तनाव प्रबंधन, आहार और आरोग्य (कोविड-१९ के संदर्भ में) व्यवस्था के संबंध में महत्त्वपूर्ण जानकारी वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक पारसमल दुगड़ द्वारा दी गई।

कार्यशाला का आरंभ गुरु भगवंतों के वंदन नमन से हुआ। कार्यशाला की संचालिता अनीता गोंडिया ने मुख्य वक्ता

पारसमल दुगड़ का संक्षिप्त परिचय दिया। कार्यशाला का आरंभ अर्हत वंदना एवं नमस्कार महामंत्र से प्रेक्षा वाहिनी की संवाहिका रीटा सुराणा द्वारा हुआ। त्रिपदी वंदना का संगान नविता नाहटा ने किया। प्रेक्षा गीत गायन सुमधुर कोकिला निशा पिंचा द्वारा किया गया। यौगिक क्रिया का प्रयोग प्रशिक्षक बबीता संचेती ने करवाया। प्रेक्षा प्रशिक्षिका उषा धाड़ेवा ने सभी को नियमित रूप से प्रेक्षाध्यान करने की प्रेरणा दी।

प्रेक्षा प्रशिक्षक पारसमल दुगड़ ने उपस्थित सभी बहनों को प्रेक्षाध्यान के

अंतर्गत अनेक लाभकारी विस्तृत जानकारी दी। आपने अंत में बहनों को अभय-अनुप्रेक्षा भी करवाई। मंगलभावना ममता दुगड़ द्वारा एवं संकल्प पिंकी बंबोली द्वारा करवाया गया। इस अवसर पर आंध्र तेलंगाना व हैदराबाद मंडल की अध्यक्ष प्रेम पारख, चैतन्य पुरी शांति सूरिस्वर मंदिर की अध्यक्ष सविता रायसेनी व कई गणमान्य भाई-बहनें उपस्थित थे। अंत में आभार प्रेक्षावाहिनी संवाहिका रीटा सुराणा द्वारा किया गया। मंच संचालन संवाहक अनीता गोंडिया द्वारा किया गया।

सेवा कार्य

साउथ हावड़ा।

अगुव्रत समिति एवं तेषुप ने मिलकर महामारी व लॉक डाउन के समय जरूरतमंदों के बीच भोजन वितरण का कार्य किया। सर्वप्रथम सभी साथियों ने नवकार महामंत्र का जाप किया। तत्पश्चात सभी साथियों ने भोजन वितरण में तन, मन से अपना सहयोग दिया। भोजन वितरण में अगुव्रत समिति, हावड़ा के अध्यक्ष मनोज कुमार सिंघी, उपाध्यक्ष-प्रथम अजीत बेद, मंत्री राजेश कुमार बोहरा, सहमंत्री दीपक नखत, कोषाध्यक्ष डालम गोंडिया, प्रचार-प्रसार मंत्री राकेश धारीवाल व अन्य तेषुप साउथ हावड़ा अध्यक्ष पवन बैंगानी, मंत्री वीरेंद्र बोहरा, सहमंत्री ज्ञानमल लोढ़ा, संयोजक कंवर लाल राखेचा आदि अनेक सदस्यगण उपस्थित थे। कार्यक्रम के प्रायोजक के रूप में शुभचिंतक का सहयोग प्राप्त हुआ।

शासनश्री साध्वी कमलप्रभाजी की स्मृति सभा

सिकंदराबाद।

साध्वी कमलप्रभा जी की स्मृति सभा, सिकंदराबाद तेरापंथ भवन में परिसंपन्न हुई। उनका गुणानुवाद करते हुए शासनश्री साध्वी जिनरेखाजी ने कहा कि साध्वी कमलप्रभा जी 'लाडनू' के प्रतिष्ठित परिवार से थीं। वे एक मिलनसार व मधुरभाषी साध्वीश्री थीं। उनके साथ हमें भी रहने का मौका मिला। वे वैश्विक बीमारी कोरोना की चपेट में आ गई थी व अंत में स्वल्पकालिक अनशानपूर्वक दिवंगत हो गईं। उनकी स्मृति में सभी साध्वियों ने चार लोगसस का ध्यान किया।

साध्वी निर्वाणश्री जी ने साध्वी कमलप्रभा जी के प्रति अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि वे एक ऐसे परिवार से थीं, जिससे १६ व्यक्ति दीक्षित हुए। वे पहले साध्वीश्री मोहनाजी के साथ रही, उनके देहावसान के पश्चात अग्रगण्य के रूप में करीब ४० वर्षों तक विचरण किया व धर्मसंघ की प्रभावना की।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि कोविड पॉजिटिव होने के पश्चात कवीब एक माह तक उससे लड़ते-लड़ते आखिर साध्वीश्री चली गईं। अंतिम क्षण तक वे त्याग की भावना रखते हुए ११ मिनट के अनशनपूर्वक संसार को अलविदा कह गईं।

ज्ञातव्य है कि साध्वीश्री आचार्यश्री महाश्रमण जी के दर्शन सेवा हेतु भीलवाड़ा आई पर अचानक दिवंगत हो गईं।

मंगल भावना कार्यक्रम

भिवानी।

शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी का मंगल भावना का कार्यक्रम प्रेक्षा विहार, भिवानी में आयोजित किया गया। जिसमें शासनश्री सुमनश्री जी ने अपने १३ महीने के लंबे प्रवास पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि भिवानी एक पुराना क्षेत्र है, जिसमें श्रद्धा भक्ति व सेवा भावना कूट-कूटकर भरी हुई है, उनकी यह भावना उत्तरोत्तर बढ़ती रहे, यही आशीर्वाद सबको प्रदान किया। साध्वी सुरेखाश्री जी ने श्रावकों की भावना में जोश भरते हुए कहा कि आगामी चातुर्मास वाली साध्वियों की भी खूब-खूब सेवा करें। साध्वी मधुलता जी के संघ भक्ति से ओतप्रोत सुमधुर गीत के संगान ने श्रावक समाज को मंत्रमुग्ध कर दिया। साध्वी मननप्रभा जी की कविता से सबके चेहरे पर मुस्कान उभर आई।

कार्यक्रम का शुभारंभ खुशी नाहटा ने महाश्रमण अष्टकम के मंगलाचरण के रूप में किया। श्रावक समाज ने साध्वीश्री जी से खमतखामना की। सुरेंद्र जैन, महेंद्र जैन, माणकचंद नाहटा, उपासक रमेश जैन, बृजेश आचार्य, के०के० वर्मा, सुनीता नाहटा, नवीन नाहटा, रेनु नाहटा, केशव जैन आदि भाई-बहनों ने साध्वीश्री जी के विहार के प्रति मंगलभावनाएँ व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन पूर्व अध्यक्ष वनिता जैन ने किया। इस अवसर पर गोपाल जैन, विनोद जैन, लक्ष्मण अग्रवाल, ओम प्रकाश जैन, नरेश लहरिया, प्रेमलता जैन, रेखा जैन, शिखा जैन, मंजू जैन, ललित शर्मा आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे, जयघोष के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

★ जीवन का सार है सच्चाई। दुनिया में यथार्थ भाव आज भी जीवित है। कुछ लोग ऐसे मिलेंगे जो यथार्थ की आराधना करने का प्रयास करते हैं।

—आचार्य श्री महाश्रमण

13



अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स

21 जून - 4 जुलाई, 2021

वैक्सीनेशन कैंप का आयोजन

लिलुआ।

तेरापंथी सभा, तेयुप एवं महिला मंडल के संयुक्त तत्वावधान में तेरापंथ भवन में प्रथम वैक्सीनेशन कैंप का आयोजन हुआ। अग्रिम रजिस्ट्रेशन करने वाले कुल ३०८ व्यक्तियों को कोविड वैक्सीन की प्रथम डोज दी गई। इस कैंप का आयोजन विनायक हेल्थ वर्ल्ड के सहयोग से किया गया। कैंप की शुरुआत जैन संस्कार विधि एवं मंगलाचरण के साथ मनोज बर्मन ने की।

विश्व नेत्रदान दिवस के उपलक्ष्य पर तेयुप अध्यक्ष भरत सिर्रोहिया ने इस आयाम को प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से गति प्रदान करने वाले सभी लोगों को साधुवाद दिया एवं नेत्रदाता के परिवार जनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

इस आयोजन पर सभा के मुख्य न्यासी अमरचंद्र बैद, न्यासी अजित सिंह चोपड़ा, न्यासी रंजीत सेठिया, तेरापंथी सभा अध्यक्ष मनोज बैद, मंत्री दिनेश सुराणा, महिला मंडल अध्यक्ष बेला पौरवाल, तेयुप अध्यक्ष भरत सिर्रोहिया आदि अनेक पदाधिकारी उपस्थित थे।

कोविड टीकाकरण शिविर

राजारजेश्वरी नगर।

तेरापंथ सभा/ट्रस्ट एवं तेयुप के संयुक्त तत्वावधान में तेरापंथ भवन में एस्टर हॉस्पिटल के सहयोग से 9८ लस सदस्यों के लिए कोविड रोधी टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें ३२० लोगों ने टीका लगवाया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष मनोज डागा ने सभी उपस्थित जनों सहित एस्टर अस्पताल की टीम का स्वागत किया तथा डॉक्टरों का सम्मान किया।

शिविर में तेरापंथ ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष कमल दुगड़, अभातेयुप से डॉ० आलोक छाजेड़, संजय बैद, सभा मंत्री विक्रम मेहर, उपाध्यक्ष अनिल सुराणा, राजेश भंसाली, संगठन मंत्री, राजेश छाजेड़, डॉ० प्रकाश छाजेड़, पवन नौलखा एवं तेयुप के अध्यक्ष नरेश बाटिया, मंत्री धर्मेज नाहर, उपाध्यक्ष सुशील भंसाली, रणजीत चोपड़ा, सहमंत्री विकास छाजेड़, वरुणा पटावरी, कोषाध्यक्ष पंकज बैद, संगठन मंत्री विकास छाजेड़, निवर्तमान अध्यक्ष गुलाब बाटिया, कार्यसमिति सदस्यों तथा अनेक तेरापंथ सभा के एवं तेयुप सदस्यों ने अपनी सेवाएँ देकर इस शिविर को सफल बनाया।

सेवा कार्य

लिलुआ।

अणुव्रत समिति हावड़ा एवं तेयुप, लिलुआ द्वारा कोविड-१९ महामारी व लॉक डाउन के समय जरूरतमंदों के बीच भोजन वितरण किया।

सर्वप्रथम सभी साथियों ने नवकार महामंत्र का जाप किया। तत्पश्चात सभी साथियों ने भोजन वितरण में सहयोग दिया। भोजन वितरण में अणुव्रत समिति, हावड़ा के अध्यक्ष मनोज कुमार सिंधी, उपाध्यक्ष-प्रथम संयोजक अजीत बैद, मंत्री राजेश कुमार बोहरा, सहमंत्री दीपक नखत, तेयुप, लिलुआ के अध्यक्ष भरत सिर्रोहिया, उपाध्यक्ष-प्रथम विकास पुगलिया, उपाध्यक्ष-द्वितीय अमृत बाफना, सहमंत्री अंकुश जैन संयोजक विनय बाफना आदि की सहभागिता रही। इस कार्यक्रम के प्रायोजक के रूप में रणजीत लुणिया, सुरेंद्र सेखानी, शांति कुंडलिया, शांति श्रीमाल का सहयोग रहा।

तेयुप सूरत का सम्मान

सूरत।

भारतीय जैन संगठन, सूरत द्वारा कोरोना की द्वितीय लहर में सेवारत सूरत महानगर के कोरोना वारियर्स के सम्मान में भगवान महावीर यूनियर्सिटी ऑडिटोरियम, सूरत में आयोजित 'सम्मान सेवा का' सम्मान समारोह कार्यक्रम में तेयुप, सूरत द्वारा प्रदत्त सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए स्मृति चिह्न से सम्मानित किया गया।

तेयुप, सूरत के अध्यक्ष मुकेश राठोड़ ने बताया कि कोरोना वैश्विक महामारी की दूसरी लहर ने सभी को खूब आहत किया। सेवा, संस्कार, संगठन त्रिआयामी उद्देश्यों को लक्षित तेयुप, सूरत ने इस दौर में ब्लड, प्लाज्मा, वैक्सीनेशन, ऑक्सीजन, हॉस्पिटल में बेड की व्यवस्था, दवाई की सुचारु व्यवस्था कर सेवा का सराहनीय कार्य किया। इस हेतु बीजेएस ने तेयुप, सूरत का सम्मान किया। इस सम्मान को अध्यक्ष मुकेश राठोड़ ने ग्रहण किया।

राग-द्वेष से मुक्ति मोक्ष प्राप्ति की सबसे बड़ी युक्ति है : आचार्यश्री महाश्रमण

रायपुरिया, १० जून, २०२१



तीर्थकर के प्रतिनिधि, जन-जन के तारक आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः रायपुरिया शहर में पधारे। पूज्यप्रवर युवावस्था में भी सन् २००४ में इस शहर में पधारे थे। मंगल पाथेय प्रदान करते हुए महासूर्य ने फरमाया कि धार्मिक साहित्य में मोक्ष की बात आती है। जैन दर्शन के नवतत्त्वों में भी पहला तत्त्व जीव है, तो अंतिम तत्त्व मोक्ष है।

मोक्ष परम लक्ष्य होता है। मोक्ष हो जाने के बाद उस मोक्ष प्राप्त आत्मा का न जन्म होता है न मृत्यु। रोग-शोग कुछ भी नहीं होता। अशरीरी-निराकार अवाक और अयन होता है। अलेश्य, अयोग होता है। केवल शुद्ध आत्मा मोक्ष में अवशेष रहती है। आत्मा निष्कर्म-अकर्म हो जाती है।

मोक्ष को प्राप्त जीव को सिद्ध-मुक्त कहा जाता है। परमात्मा-परमेश्वर भी कह सकते हैं। शास्त्रकार ने बताया है कि कौन व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त नहीं होता। मोक्ष की प्राप्ति में कई बाधाएँ हैं। जो चंड स्वभाव का आदमी है, गुरूसैल है, उसके लिए मोक्ष का दार मानो बंध है। अकषाय बने बिना मोक्ष नहीं होता।

दिगंबर वा श्वेतांबर हो जाने से, तर्कवाद में प्रवीण हो जाने से, तत्त्ववेत्ता बन जाएँ, अपने सिद्धांत की बहुत आग्रहपूर्ण प्रस्तुति कर दें, पर इतने मात्र से मुक्ति नहीं हो सकती। सारांश या निष्कर्ष बता दिया कि कषायों से मुक्ति मिल गई, राग-द्वेष से मुक्ति मिल गई, वह अपने आपमें मुक्ति हो जाती है।

जीवन के बाद मुक्ति मिलती है, वह तो परम मुक्ति होती है। परंतु जीवन-काल की सीमा तक भी मुक्ति मिल सकती है। संस्कृत ग्रंथ में कहा गया है कि जिसने मन और मदन को जीत लिया, जो

मानसिक-कायिक विकारों से मुक्त हो गया है, आशा-लालसा से निवृत्त हो गया है, ऐसे व्यक्ति का तो मानो यहाँ मोक्ष हो गया।

एक शब्द आता है—जीवन मुक्त। जीते हुए भी मुक्त। जो अतीत की स्मृतियों में व्यर्थ न जाए, भविष्य की व्यर्थ विचारणा-कल्पना न करे, वर्तमान में जो कुछ प्राप्त है, उसमें संतुष्ट रहें, मध्यस्थ रहें, यह जीवन-मुक्त आदमी का लक्षण है।

आदमी को ज्यादा गुस्सा नहीं करना चाहिए, जो बात कहनी है, शांति से कहे। गुस्सा अहितकर होता है। मनुष्यों का शत्रु है—गुस्सा। मोक्ष में तो ये बाधक है ही पर व्यवहार में भी गुस्सा नुकसानदेह होता है। जब तक गुस्सा रहेगा तब तक मुक्ति नहीं।

गर्व है, मति और ऋद्धि का अहंकार रखने वाला है, उसकी मुक्ति नहीं। चुगलखोरी वृत्ति भी बाधा है। साहस, विना सोचे-विचारे काम करने वाला अविमर्सकारी होता है, सहसा करने वाला होता है, उसके लिए भी मोक्ष मानो बाधित है। जो चिंतनपूर्वक-विचारपूर्वक काम करने वाला होता है, वह अच्छी बात उसके लिए होती है।

कोई भी काम जो विशेष है, सहसा नहीं करना चाहिए। आवेश में भी निर्णय नहीं करना चाहिए। अविवेक परम आपदाओं का स्थान है। जो चिंतनपूर्वक काम करने वाला है, संपदाएँ उससे आकृष्ट होकर, उसके गुणों में लुब्ध होकर आदमी का वरण करती है।

अनुशासन की अवहेलना करने वाला, अविनय से पेश आने वाला है, उसके लिए भी मोक्ष बाधित हो जाता है। निज पर शासन, फिर अनुशासन सुंदर सूक्त है। जो स्वयं अनुशासित नहीं रहता है, स्वयं शिष्य नहीं बन सकता है, तो वह अच्छा गुुरु भी नहीं बन सकता है। जो स्वयं दूसरों के

अनुशासन में रहे, वो अच्छा अनुशास्ता बन सकता है।

एक बाधा है—असविभाग। दूसरे का हक में कैसे लूँ। गृहस्थ भी इसका ध्यान रखें कि दूसरे के अधिकार की चीज पर अधिकार नहीं जताना। मेरा सो मेरा, तेरा सो भी मेरा ये भाव न रहे। ये ओछा चिंतन है। तेरा सो तेरा, मेरा भी तेरा, ये चिंतन रखें। अध्यात्म का चिंतन है—ना कुछ तेरा, ना कुछ मेरा, दुनिया रैन बसेरा। यह परमार्थपरक चिंतन हो जाता है।

जहाँ संविभाग होता है, वहाँ समीचीनता रह सकती है। चाहे भोजन की बात हो या काम की बात और गृहस्थों के संपत्ति की बात हो, जहाँ असविभाग है, वो एक सम्यक् स्थिति भी नहीं हो सकती है। जो मोक्ष के साधक है, साधु है जिन्होंने मोक्ष के लिए परिवार, परिग्रह, मोह छोड़ दिया, परमार्थ के पथ पर आगे बढ़ने का संकल्प ले चुके हैं। उनके लिए विशेषतया धातव्य है कि जो मोक्ष के बाधक तत्त्व हैं, उनसे बचने का प्रयास करें और निर्बाध होकर मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करें।

आज रायपुरिया आए हैं। २००४ में पूर्व-अवस्था में आया था। यहाँ की जनता व श्रावक-श्राविकाओं में खूब अच्छे संस्कार रहे, धर्म-अध्यात्म की साधना में आगे बढ़ें। मंगलकामना। पूज्यप्रवर ने सम्यक्-दीक्षा ग्रहण करवाई।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में स्थानीय अध्यक्ष रमणलाल कोटडिया, महिला मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला ज्ञानार्थी, किशोर मंडल, तेयुप से सोहित-मोहित कोटडिया, जीवन विज्ञान से प्रकाश कोटडिया, स्कूलों के बच्चे, ज्ञानमल मणोत, किरण बंडारी, तेयुप अध्यक्ष शुभम कोटडिया ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कर्तव्य के प्रति जागरूक रहने से मिलती...

(पृष्ठ १४ का शेष)

ज्ञान नहीं, आचरण की भावना है, तो भी कमी। ज्ञान है और आचरण नहीं तो भी कमी। साधु में कर्तव्य का बोध भी हो और पालन भी हो तो परिपूर्णता आती है। साधु का पहला कर्तव्य है, अपने साधुत्व की सुरक्षा करना। कर्तव्य पालन की आधारशिला है, कर्तव्य का बोध हो तो पालन ठीक हो सकता है।

साधु के पाँच महाव्रत, पाँच समितियाँ और तीन गुणियाँ हैं। यह साधुत्व है। साधु अहिंसा के प्रति जागरूक रहे। मार्ग में चलना है, तो ईर्ष्या समिति का पालन हो। साधु के अनेक नियम हैं, उन नियमों के प्रति निष्ठा रहे, नियमों का ज्ञान भी रहे और नियमों का पालन भी हो। नियमों का ज्ञान-निष्ठा हो तो पालन सुगम हो सकता है। माता-पिता संतान को नैतिक-धार्मिक संस्कार दें, यह उनका कर्तव्य हो जाता है। भगवान ऋषभ ने तो सांसारिक बातों का भी ज्ञान दिया।

साधु बहिर्विहार में गए तो व्याख्यान देना भी उनका कर्तव्य है। ऐसा नहीं चातुर्मास में मौन लेकर बैठ जाएँ। लोगों को तत्त्व ज्ञान भी समझाएँ। जनोद्धार का काम करना होता है। गोचरी का भी सभी को लाभ दें। कर्तव्यों के प्रति जागरूकता होती है, तो सफलता की श्री प्राप्त हो सकती है।

व्याख्यान देने से पहले तैयारी होगी तो खुद का ज्ञान बढ़ेगा और ओरों को भी लाभ मिलेगा। गोचरी के समय घरों की, गृहस्थों की संधाल करें। प्रेषणा दें। लोग आते हैं, उनको जीकारा भी दें। मौके पर बात भी करें। जन संपर्क करना साधु का कर्तव्य है। बिना तैयारी का व्याख्यान प्राणवान नहीं हो सकता।

साथ के साधुओं के साथ पारस्परिक मधुरता रहे। यह चित्त समाधि के लिए भी ठीक है। व्यावहारिक और कार्य संपन्नता की दृष्टि से भी ठीक है। इससे प्रभाव अच्छा पड़ सकता है। व्यवहार भी अच्छा हो। बहिर्विहार में भी साधु जागरूकता रखे तो सफलता की श्री मिल सकती है। पूज्यप्रवर के स्वागत में प्रीति पीपाड़ा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।



जीवन व्यस्त भले हो पर अस्त-व्यस्त ना हो : आचार्यश्री महाश्रमण

ऊनी, 9c जून, 2021

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः विहार कर ऊनी पधारे। जिन प्रवचन प्रवर्तक ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि तीन शब्द हैं—हेय, उपादेय और ज्ञेय। हेय यानी छोड़ने योग्य चीज, उपादेय यानी ग्रहण करने योग्य चीज और ज्ञेय यानी जानने योग्य चीज।

तात्त्विक भाषा में ज्ञेय तो सभी पदार्थ है। जहाँ केवल जानना है, वहाँ ज्ञान मात्र हो गया। ज्ञान होने के बाद छोड़ने योग्य क्या और ग्रहण करने योग्य क्या? इस विवेचन के आधार पर आदमी छोड़ने योग्य को छोड़ने का और ग्रहण करने योग्य को ग्रहण करने का प्रयत्न करे।

यह जो ज्ञान है—हेय, उपादेय का कैसे हो सकता है? इस ज्ञान का एक माध्यम है—श्रवण। सुनने से ज्ञान होता है। हमारी श्रोत्रेन्द्रिय कान ज्ञान का माध्यम बन जाता है। एक घंटे तक अच्छे गुरु-साधु की वाणी सुनता है, तो एक घंटे का समय सार्थक हो गया।

गृहस्थ गार्हस्थ्य में रहते हुए भी प्रवचन आदि सुनने के लिए समय निकालता है, तो विशेष बात हो जाती है। गृहस्थ व्यस्त रहते हैं, पर कुछ समय निकालने का प्रयास करे तो समय निकल



सकता है।

आगे धंधों, पाछे धंधो,

धंधा माहि धंधो।

धंधा मांस्यू समय निकाले,

वो साहिब को बंदो।।

दिन भर में कई काम कर लिए, कई काम पीछे करने बाकी हैं, बीच में और कोई काम आ सकता है, पर इन सब कामों के बीच जो धर्म के लिए समय

निकाल ले, वो कुछ अंशों में अच्छा धार्मिक हो सकता है। जीवन व्यस्त हो सकता है पर अस्त-व्यस्त नहीं होना चाहिए। काम का तनाव नहीं रखना चाहिए। समय प्रबंधन करें।

टाइम मैनेजमेंट अच्छा हो तो सारे कार्य अच्छी तरह से संपादित हो सकते हैं। कार्यों की भीड़ में खो जाना नहीं चाहिए। रास्ता निकालें, व्यवस्था अच्छी

करें। कार्य अधिक है, समय सीमित है तो पहली बात है कि चित्त की प्रसन्नता रहनी चाहिए। चिंता-तनाव न रहे। यह टाइम मैनेजमेंट का ही एक सूत्र है। दूसरी बात है कि प्राथमिकता किस काम को दी जाए। सबसे पहले जल्दी संपन्न करने वाले काम को प्राथमिकता दें।

मुख्य और महत्वपूर्ण काम को प्राथमिकता दें। जो कार्य विलंबित किए

जा सकते हैं, उन्हें बाद में करें। कार्य और समय में सामंजस्य बिठाया जा सकता है। जैसे केवली समूहघात करते हैं। टाइम मैनेजमेंट का प्राकृतिक सूत्र है—केवली-समूहघात। मुनि वर्धमान कुमार जी को बहिर्विहार का निर्देश दिया गया है, उनको लक्ष्य करके पूज्यप्रवर ने समय की नियमितता के बारे में समझाया।

करणीय कार्य और दिनचर्या के हिसाब से समय का प्रबंधन करें। समय-सारिणी बनाकर कार्य करें। बहिर्विहार में सफलता पाने के लिए टाइम मैनेजमेंट और परिश्रम करना होता है। तीसरी बात है—त्याग करना पड़ता है। Happiness, Priority, Sacrifice एच०पी०एस० यह टाइम मैनेजमेंट का फार्मूला है। इससे बहिर्विहार सफलतम और लाभदायी हो सकता है। मुनि वर्धमान और मुनि राहुल न्यारा में अच्छा काम करें।

पूज्यप्रवर आज ऊनी ग्राम पधारे हैं। ग्राम पंचायत के सरपंच बाबूलाल राठौड़ ने पूज्यप्रवर का स्कूल में पधारने पर स्वागत किया। व्यवस्था समिति की ओर से उनका सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मनन कुमार जी ने किया।

कर्तव्य के प्रति जागरूक रहने से मिलती है सफलता : आचार्यश्री महाश्रमण



महु, 20 जून, 2021

वात्सल्य की प्रतिमूर्ति आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः महु ग्राम में पधारे। मंगल प्रेरणा प्रदान करते पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हमारे जीवन में कर्तव्य और अकर्तव्य का बोध होना बहुत महत्वपूर्ण होता है। जो आदमी अपने कर्तव्य को नहीं जानता और अकर्तव्य को भी नहीं समझता, उस व्यक्ति का अपना जाने-अनजाने ऐसा अनिष्ट हो सकता है, जिसके बारे में उन्होंने कभी सोचा भी नहीं।

कर्तव्य का बोध होना और कर्तव्य का पालन करना, अकर्तव्य का बोध होना और अकर्तव्य से परहेज रखना-बचना। बोध होना एक बात है, आचरण होना दूसरी बात है। ज्ञान और आचार दोनों के होने से परिपूर्णता आती है। संस्कृत श्लोक में कहा गया है कि कुछ लोग बात जानते तो हैं, पर कर्तव्य का पालन नहीं करते। कुछ लोगों में कर्तव्य-पालन की निष्ठा है, पर उन्हें अपने कर्तव्य का ज्ञान ही नहीं है।

(शेष पृष्ठ 93 पर)

अहिंसा यात्रा : चित्रमय झलकियाँ



सामार : अमृतवाणी